# युगों
# की
# कहानी

सी.ई.दासन

गॉस्पल लिट्रेचर सर्विस मुम्बई

हैब्रोन – हैदराबाद

प्रथम प्रकाशन: अगस्त१९८६ - ३००० कॉपियाँ

प्रिन्टैड एन्ड पब्लिष्ट बाय गौस्पल लिट्रेचर सर्विस

उद्योग भवन, २५०-डी, वर्ली, मुम्बई-४०००२५

# प्रस्तुति

'युगों की कहानी' नामक यह पुस्तक इस युग की वास्तविकता की लगातार खोज का विश्वसनीय उत्तर है। हैब्रोन, हैदराबाद कलीसिया के सेवाकाल में ब्रदर सी.ई.दासन ने यह पुस्तक लिखी। परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के लिए बनाई गई मूल, योजना को यह उत्तम रचना प्रस्तुत करती है। इसमें भूतकाल, वर्तमान और भविष्य की उत्तेजक बातें प्रगट की गई हैं।

ब्रदर दासन ने देखा कि इस पुस्तक की वर्तमान जगत को कितनी आवश्यकता है, जबकि वैज्ञानिक खोजों और हम विश्वासियों द्वारा मान्य सभ्यताओं के बीच विरोधात्मक खोजें हो रही है। उन्होने यह अनुभव किया कि अधिकांश मसीहियों को आज दृढ और बुद्धिपूर्ण विश्वास की आवश्यकता है।

बहुत कम लोगों ने बाइदल को इतनी गहराई से समझा है। और बहुत ही कम ऐसे हैं जिन्होंने पत्राचार के व्यवसाय को समझने का कष्ट किया हो। ब्रदर दासनने अपने जीवन का उत्तम समय नये और पुराने नियम के अध्ययन में व्यतीत किया। इस कारण इस पुस्तक के प्रकाशन की हमने आवश्यकता महसूस की।

मेरी प्रार्थना और आशा है कि यह पुस्तक मसीही-प्रचारकों, विश्वासियों तथा अन्य पाठकों के लिए आशीष बनेगी।

**नवम्बर १९८६**

**ब्रदर भक्त सिंह**
**है ब्रौन**

# ब्रदर सी.ई.दासन का जीवन

इस पुस्तक के लेखक सी.ई.दासन का जन्म दक्षिण भारत के तामिलनाडू मे ८ फरवरी १९४८ में हुआ था। स्नातक अध्ययन और शिक्षक प्रशिक्षण समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने एक मिशन स्कूल में कुछ वर्षों तक पढाया। अल्प अवस्थ में अनाथ हो जाने के कारण उन्हें छात्रावास में रहना पडा। बचपन में ही मसीही शिक्षा प्राप्त करने के कारण उन्होंने अपने पापों को स्वींकार किया। पर पश्चाताप् करना उनके लिए कठिन था क्यों कि उन्होंने देखा कि मसीही कहलाये जाने वाले चर्च के कई लोग पाप करते है।

ब्रदर दासन ने अपने जीवन का उत्तम समय भारतीय कॉंग्रेस और उससे सम्बीन्धत कार्यक्रमों को करने में व्यतीत किया। उनके एक पुराने विद्यार्थी के द्वारा परमेश्वर ने उनके जीवन में कार्य करना आरम्भ किया। जिसने अन्तत: उन्हें ब्रदर भगत सिंह से मिलाया। २५ वर्ष की अवस्था में ब्रदर दासन को परमेश्वर ने ढूँढ़ लिया और उन्होने मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता के रुप में स्वीकार किया।

सन १९४५ तक ब्रदर दासन को स्पष्ट ज्ञान हो गया कि परमेश्वर चाहते हैं कि वे अपने व्यवसाय से त्यागपत्र दे दें और उनकी सेवा करें। उस समय से वे ब्रदर भगत सिंह के साथ यह – प्रचारक के रुप में कार्य करने लगे और एक कलीसिया की स्थापना की।

भारत देश के विभिन्न भागों में एक प्रचारक के रुप में वचन सुनांते समय ब्रदर दासन ने छोटे-छोटे कई व्याख्यात्मक लेखों का प्रकाशन किया।

२३.१०.१९८५ को ब्रदर दासन के लिए प्रभु की महिमा में उन्नत्ति प्राप्त हो गई।

# अध्याय-१

इतिहास मनुष्य की कहानी है। विश्वसनीय एतिहासिक घटनाएँ हमें कुछ हजार वर्षं पूर्व तक ले जाती है, किन्तु मानव-उत्पत्ति तक नहीं ले जा सकती।

विज्ञान ने धरती की कहानी बतांने का प्रयास किया है। कुछ कहते हैं कि करोडों वर्षो पहले सूर्य जलती हुई गैसों काबड़ाभारी गोला था और जलती गैसों के कुछ छोटे टुकडे सूरज से अलग हो गये। धीरे-धीरे ये गोले ठन्डे हो गये और गृह, नक्षत्र बनकर सूर्य के चारों और घूमने लगे। पृथ्वी भी इनमें से एक है। परन्तु कोई भी वैज्ञानिक पृथ्वीं की उत्पत्ति के बारे में विश्वसनीय रुप से कुछ बता नहीं सकता है। इस प्रकार से ना तो इतिहास और ना विज्ञान इसके यथार्थ आरम्भ से कहानी आरम्भ कर सकता है।

पवित्र बाइबल में परमेश्वर हमें एक सुन्दर कहानी बताते हैं। जब हम इसे सुनते हैं तो बडे अचम्भित होते हैं। यह कहानी करोडों-करोड़ वर्ष पहले, अनन्त युग में आरम्भ हुई। सच पूछों तो यह कहानी मानव के प्रति परमेश्वर के अनन्त प्रेम की अनन्त कहानी है।

# परमेश्वर

इस कहानी को आरम्भ करने से पहले मुझे कुछ बताना है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि केवल एक ही परमेश्वर है जो बुद्धि, शक्ति और प्रेम से भरपूर है वही स्वर्ग और पृथ्वी का रचयेता है। इस पृथ्वी पर रहनेवाले हर मानव का भी वही बनाने वाला है, चाहे हम किसी समान, भाषा या धर्म के हो। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर है। वही सब मानवों का परमेश्वर है और वही मेरा और आपका परमेश्वर है।

प्रिय मित्रों क्या आप इस परमेश्वर से प्रेम करते गराहते और आराधना करते हैं? यदि नहीं, तो प्रार्थना करें कि वो आपकी ऑखों को खोले कि आप उसकी बडी महिमा को देख सकें और उससे प्रेम कर सकें, उसकी सराहना और स्तुति कर सकें।

पवित्रशास्त्र कहता है – (भजन ९५: ६-७)

“आओ हम झुककर दण्डवत करें, और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें!

क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है,

और हम उसकी चराई की प्रजा और

उसके हाथ की भेंड़े है।

भला होता कि आज तुम उसकी बात सुनते।

## त्रिएकता

पवित्र बाइबल स्पष्ट करता है कि परमेश्वर त्रिएक है, अर्थत् तीन मनुष्य मिलकर एक मनुष्य। परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा। ये तीनों एक होकर भी अलग-अलग हैं। यह कैसे हो सकता है? यह एक रहस्य है जिसे हम पूर्ण रुप से समझा नहीं सकते।

इससे हम आचम्भित ना होवें क्योंकि ऐसे कई रहस्य है जिन्हें हम समझ नहीं सकते हैं। मनुष्य का जान और योग्यताएँ इतनी सीमित हैं कि वह स्वयं को भी पूर्णत: नहीं समझ पाता है, तो हम कैसे परमेश्वर को पूर्णत: समझ सकते है?

उदाहरण स्वरुप – क्या आप जानते हैं कि जन्म से पहले आप कहाँ थे और मृत्यु के बाद कहाँ जायेगें?

दूसरा उदाहरण देखें – आपका एक नाम है जैसे हर किसी का होता है। क्या यह नाम आपके शरीर का है या आपमें रहनेवाली आत्मा का है? आपका उत्तर शायद होगा कि आपके शरीर और आत्मा दोनों का यह नाम है। जो आपको मानव बनाता है। परमेश्वर ने आपके शरीर और आत्मा को इतनी अच्छी तरह रचा है कि ये भिन्न चीजें मिलकर एक मानव बन गई है। जब तक मानव जीवित है हम कहते हैं कि उसका तन और प्राण एक हैं। मृत्यु के बाद ही जान पाते हैं कि ये अलग-अलग हैं क्योंकि प्राण तन को छोडकर चला जाता है। अत: हममें से हरएक के पास एक तन और एक प्राण है। ये दोनों पूर्णत: भिन्न होकर भी एक हैं। यह कैसे होता है? तो यह भी एक रहस्य है।

प्रथम पुरुष – पिता परमेश्वर अदृश्य, और समझ से परे हैं। बाइबल कहती है कि परमेश्वर को कभी किसी मनुष्य मे नहीं देखा (यहून्ना १:१८) हमारे प्रभु यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया है "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है" (मत्ती ६:९) अत: हमेंशा सौभाग्य है कि हम उन्हें अपना स्वर्गीय पिता कह सकते है। हम जानते है कि परमेश्वर पिता सिद्ध हैं क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा हैं इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (मत्ती ५:४८)

दूसरा पुरुष – परमेश्वर का पुत्र दृश्यवान है, वह अदृश्य व अगम्य परमेश्वर का गम्य और दृश्यवान रुप है। बाइबल कहती है – (इग्रा १:३) वह उसकी महिमा का प्रकाश, उसके तत्व की छाप है। यही परमेश्वर का पुत्र अदन की बारो में आदम के साथ चलना था, यही सदरक, मेशक और अबेदनगो के साथ आग में चल रहा था। ही यशागाह को स्वर्ग के सिहांसन पर बैठा हुआ दिखाई दिया। परमेश्वर का यही पुत्र मनुष्य बनकर ३३ वर्षो तक फिलस्तीन की भूमि पर रहा। पवित्रशास्त्र कहता है – (यूहन्ना १:१८)

“परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया।

तीसरा मनुष्य - यह पवित्र आत्मा है जो हर एक के हृदय में रहता है ताकि उसे नम्र और कोलम बनाये कि वह अपेन पापों से पश्चाताप् करे। पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशू के सुन्दर व्यक्तित्व को दर्शाता है कि हम उससे प्रेम करें और उस पर विश्वास करें। यह परमेश्वर का पवित्र आत्मा ही है जो हमें दिखाता है कि जब यीशू मसीह को अपना उद्धारकर्ता मान लेते हैं। हम मनुष्य के हृदय में रहनेवाली पवित्र आत्मा प्रयत्न करती है कि हमें यीशु, और उद्धार की औ ले जाये।

परमेश्वर का यह उद्देश्य है कि हम त्रिएक परमेश्वर से घना सम्बन्ध रखें। इसलिए प्रभु यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी कि वे नये अनुयायियों को पिता, पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दें (मत्ती २८:१९)

## अध्याय – २
## अनन्तता

बाइबल को कहानी कई वर्षों पूर्व अन्तता से आरम्भ होती है। अनन्तता क्या है? हम मानव समय के बहुत आदी है। समय अर्थात् घन्टे, दिन, महीने और वर्ष। हम यह भी नहीं सोचते कि समय का एक आरम्भ था। उत्पत्ति की पुस्तक में इस आरम्भ का वर्णन है – उत्पति १:१ “आदि में परमेश्वर ने आकाशऔर पृथ्वी की सुष्टि की।” यहाँ आदि का अर्थ है कि उस समय कोई वकत नहीं था। आदि से पहले का युग बाइबल में अनन्तकाल कहा गया है। इस अनन्तकाल में कोई सूरज, चाँद नहीं था। केवल ईश्वर था और कुछ भी नहीं। उस समय स्वर्गदूतों की भी सृष्टि नहीं की गई थी।

आये देंखें कि हजारों हजार वर्षो पहले क्या हुआ। पवित्रशास्त्र कहता है कि "जगत की उत्पत्ति से उसने हमें चुन लिया है कि उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।" (इफी १:४)

जो लोग परमेश्वर के वचन में विश्वास करते हैं उनके लिए यह पद बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत, बहुत पहले ही हमारे प्रेमी पिता ने आपके और मेरे विषय में सोचा; और हमारे लिए कई योजनाएँ तैय्यार की। पहली कि हम उसके समान पवित्र होवें। फिर योजना की कि हम कहाँ और कब जन्म लें। हम जो परमेश्वर के बच्चे हैं परमेश्वर की इच्छानुसार विवाह करते है, हमारा विश्वास है कि परमेश्वर ने हर जोड़े को तैय्यार किया है (अर्थात् एक पति के लिए एक पत्नी और एक पत्नी के लिए एक पति) यह योजना हमारे जन्म से पहले की है। इसीलिए सच्चे मसीही पति पत्नी अपने जीवनसाथी से इतना अधिक प्रेम करते है।

हमारे मनन के लिए एक दूसरा तथ्य है कि  परमेश्वर ने अपने बच्चों के लिए राज्य तैय्यार किया है। पवित्रशास्त्र कहता है तब राजा अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिताके धन्य लोगों, आओ उस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैय्यार किया हुआ है। (मत्ती २५:३४) परमेश्वर ने आपके और मेरे लिए जिन बहुमूल्य वस्तुओं को इस राज्य में तैय्यार किया है उन सबका हम वर्णन नहीं कर सकते। "परन्तु ऐसा लिखा है कि जो आँख ने नहीं देखीं और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ी, वे ही है, जो परमेश्वर ने अपने प्रेमं रखनेवालों के लिए तैय्यार की है।" (कुरिन्थ २:९)

हम सब जानते है कि माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के लिए कैसे अच्छे चीजों की तैय्यारी करते है। संसार के कई भागों में लडकियाँ अपने पहलौं ढों के लिए कई सुन्दर

वस्त्र तैय्यार करती है क्योंकि वे जानती है कि उनकी शादी पहले होगी और फिर उन्हें बालक उत्पन्न होगा। इस सुन्दर आशा से, बड़े प्यार से वे कई उत्तम वस्तुएँ बटोरती और किसी बक्से में छुपाकर रखती हैं। ईश्वर का प्रेम तो मनुष्य के प्रेम से कही ज्यादा है।

अनन्तकाल से मानो परमेश्वर ने हरबीन से देख लिया है कि युगों में क्या-क्या होगा। उन्होंने देख लिया था कि आदम और हवा उस वर्जित फल को कैसे खायेंगे और पाप उनमें कैसे प्रवेश करेगा। वे देख सकते थे जब वे स्वर्गीय पिता अपने प्यारे पुत्र यीशु मसीह को क्रूस पर मरने भेजेंगे, उनके सिर पर काँटों का ताज रखा जायेगा, मुँह पर थूका जायेगा और क्रूस पर टाँगा जायेगा, तब इसका क्या उद्देश्य होगा। अनन्तकाल में ही परमेश्वर के पुत्र ने कहा था कि, पुरे संसार के पापों को दूर करने के लिए वे अपना जीवन क्रूस पर देने को तैय्यार है। इसीलिए पवित्रशास्त्र कहता है "वह मेमना जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है।" (प्रकाशित १३:८)

ईश्वर ने यह भी देखा है कि पहला आकाश और, पहली पृथ्वी का अन्त कैसे होगा और कैसे उन्हें नया आकाश और नई धरती की सृष्टि करनी होगी। प्रभु ने योजना की कि इस नई सृष्टि को वे उन लोगों को सौपेंगे जो यीशु मसीह के बहुमूल्य रक्त से उद्धार पा चुके है। वे जानते थे कि शोभायमान और सामर्थी स्वर्गदूत कभी भी मनुष्य के जैसे पाप नहीं करेंगे। फिर भी ईश्वर पिता को यह भाया कि इस नई सृष्टि में व स्वर्गदूतों को नहीं पर मनुष्यों को रखें। हमारे लिए उनमें इतना अधिक प्रेम है कि "अपने उस आनेवाले जगत को, जिसकी चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के आधीन ना किया।" (इब्रा २:५)

कितना उत्तम, कितना दयालु, कितना महान, कितना सुन्दर उद्देश्य है। परमेश्वर का आपके और मेरे लिए।

## अध्याय – ३
## रहस्य

पृथ्वी को नींव डालने से पहले परमेश्वर ने हमारे लिए सब योजनाँए बनाई हैं। उन्होने हमें अनन्त जीवन देने की योजना बनाई है, "उस अनन्त जीवन की आशा पर जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ नहीं बोल सकता सनातन से की है" (तीतुस १:२) इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने सृष्टि की रचना से पहले यह नियुक्त किया कि हमें पापों से उद्धार देने के लिए प्रभु यीशु मारे जायें? (१ पतरस १:२०) जगत की उत्पत्ति के पहिले से परमेश्वर ने मसीह में हमें चुन लिया है। (इफि: १:४) और उन्होंने हमारा नाम जीवन की पुस्तक में लिख दिया है। (प्रकाश १६:८) उन्होंने पूर्व योजना बनाई कि हम मे उनकी स्तुति और महिमा होवें। (इफी १:११-१२) जगत के आरम्भ से पहले परमेश्वर का अनुग्रह हमें दिया गया है। (२ तिमु १:९)

"पहले से ठहराए" जाना समझने में कुछ लोगों को कठिनाई हो सकती है, जिसका वर्णन इफी १:११ और रोमियों ८:२९ में है। परमेश्वर ने आपका पाप में मरना और आग की अनन्त झील में डाला जाना पहले से ठहराया है; इस बात से डरने की आवश्यकता नहीं है। बाईबल बताती है कि "परमेश्वर प्रेम है" (१ यहुन्ना ४:८) वे चाहते हैं कि सब मनुष्य बच जायें।" यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है। वह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो और वे सत्य को भली-भांति पहचान लें।" (२ तिमु २:३-४)

"यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।" (प्रेरितों १५:१८) इस पूर्व ज्ञान के कारण परमेश्वर ने आरम्भ से ही जाना है कि कौन उद्धार पायेंगे। इसलिए उनके लिए बहुत महान और सुन्दर बातों को पहले से ही

अभिषिक्त और नियोजित किया है। "क्योंकि जिन्हे उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरुप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।" (रोमियों ८:२९)

परमेश्वर ने सनातन काल से उद्देश्य पूर्ण योजना बनाई ताकि जो लोग यीशु के बहुमूल्य लहू से बचाये गये हैं कलीसिया बनें; जो मसीह का शरीर और यीशु की दुलहन है। इस कलीसिया के द्वारा जिसे उन्होने महिमापूर्ण बनाने की योजना की है, जो पूर्णत: शुद्ध और पवित्र है; प्रभु अपनी महिमा और ज्ञान को इनके द्वारा प्रगट करेंगे। "ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान इन प्रधानों और अधिकरियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाय। उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। (इफि ३:१०-११) ऐसी महान और सुन्दर बातोंको परमेश्वर ने सनातन काल से ही हमारे लिए मनसा करके नियोजित किया है।

फिर इन सब रहस्यों को अपने मन में छिपाकर रखने की प्रभु ने मनसा की – "उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सबके सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था" (इफीसयों ३:९) प्रभु के विशाल और शक्तिशाली स्वर्गदूतों को भी दस भेद का कुछ ही अंश ज्ञात था। "और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते थे।" (पितरस १:१२) पुराने नियम के समय के मूसा, दाउद और यशायाह जैसे भविष्यवक्ता जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह, यीशु के कष्टों और आनेवाली महिमा की भविष्यवाणी की उन्हें भी कहा गया कि परमेश्वर के सनातन उद्देश्य से सबन्धित बातें उन पर नही पर कलीसिया पर प्रगट की जायेंगी। (पतरस १:१२)

यह "उस भेद के प्रकाश के अनुसार है जो सनातन से छिपा रहा" (रोमियों १६:२५) यह भेद और रहस्य पैन्तीकौस्ट के दिन पवित्र आत्मा के आगमन पर ही खोला

जाना था। "(रोमियों १६:२६) परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यवक्ताओं की पुस्तक के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएं।"

प्रिय मित्रों यह भेद जो परमेश्वर के लिए इतना कीमती है, उसे अब आप लोगों पर प्रगट करे। वह आपको अपना मित्र बनाना चाहता है और आपको सब कुछ बताना चाहता है। पर आप इस भेद को तब तक कभी नहीं समझ सकेगें जब तक अपने पापों से पश्चाताप् करके यह ना मान लें कि मसीही तुम्हारे लिए, तुम्हारे बदले क्रूस पर मरा। घमंड और पक्षपात मनुष्य के हृदय को इतना अंधा बना देते हैं कि वे परमेश्वर के भेदों को समझ नहीं सकते हैं। वह मनुष्य जिसका नया जन्म नही हुआ है उसे शारीरिक मानव कहते है। शारिरीक मानव परमेश्वर की आत्मिक वस्तुँए नही समझ पाता क्यों कि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें है, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है। (१ कुरीन्थयों २:१४) जब आप पापों से पश्चाताप् करके नया जन्म लेते है तब पवित्र आत्मा को ग्रहण करके आत्मिक मनुष्य बन जाते हैं "जब सत्य का आत्मा आयेगा, वो तुम्हें सत्य का मार्ग बतायेगा। (यहून्ना १६:१३)नया जन्म पाने पर ही आसमानी रहस्य आप पर प्रगट होगा।

## अध्याय ४
## स्वर्ग और पृथ्वी

हमने देखा है कि सनातन काल से परमेश्वर का एक उद्देश्य था। ये उद्देश्य दो बातों पर केन्द्रित है – मसीह में मानव और कलीसिया जो प्रभु की देह है। पहला व्यक्तिगत और दूसरा संयुक्त। यद्यपि ये सनातन से परमेश्वर के उद्देश्य थे पर मनुष्य की रचना से प्रभु ने कार्य आरम्भ नहीं किया। अपनी अगम्य बुद्धी से उन्होंने मनुष्य के लिए एक स्थापना की

योजना की। इस स्थापना में स्वर्गदूत, तारे, सूरज, चाँद, पृथ्वी, गृह तथा जीव-जन्तु थे। इस स्थापना की तैय्यारी में परमेश्वर को सैकंडो वर्ष लगे। अदन की बारी अन्तिम स्थापना थी। सैंकड़ो वर्ष हमारे लिए एक बहुत लम्बा समय लगता होगा पर प्रियों इस बात से अचम्भित न हों कि हजारों वर्ष प्रभु के लिए एक दिन के समान है और एक दिन हजारो वर्ष के समान। (२ पतरस ३:८) याद रखें, कलीलिया को मसीह की दुल्हन होना था। अपने प्यारे बेटे के लिए ऐसी महिमामय कलीसिया दुल्हन को तैय्यार करने में परमेश्वर के सामने सैकड़ो वर्ष क्या हैं? "याकूब ने राहेल के लिए सात बरस सेवा की, और वे बराबर जान पड़े।" (उत्पति २९:२०) अपनी प्रिय राहेल की तुलना में मसीह का प्रेम अपनी दुल्हन के प्रति बहुत अधिक है।

**स्वर्ग:**

कृपया बाइबल के पहले पद को देखें "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि को।" (उत्पीत १:१) आर.व्ही.बाइबल में आकाश शब्द बहुवचन में है। पहला एक आकाश है जो परमेश्वर का निवासस्थान है जिसे "स्वर्गो का स्वर्ग" भी कहा जाता है। (२ कुरीन्थयों १२:२) स्वर्गों के स्वर्ग में ३ स्वर्ग नहीं आते इसलिए उसे तीसरा स्वर्ग भी कहा गा है। "मैं एक मनुष्य को जानता हूँ .... ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया।"

तब परमेश्वर ने स्वर्ग के दूतों की रचना की। ये स्वर्गदूत पवित्र और सामर्थी है (२ थिस १:६) ये स्वर्गदूत गिनती में दस हजार के दस गुणा और लाखों और करोड़ो के है। (प्रकाश ५:१०) प्रभु ने इन्हें मनुष्यों के पास समय-समय पर भेजा कि उन्हें ढांडस और प्रेरणा दें। कई मनुष्य अवसरों पर ये स्वर्गदूत लोगों को दिखाई दिए, कभी – कभी वे

बिलकुल मनुष्यों जैसे थे पर उजते, चमकीले और बहुत ज्योतिमानव थे। पर उनके पंख नहीं थे। कई बार लोगोंने उनका स्वागत केया और यह सोचकर कि ये मानव है उनसे बातें भी कीं तब अचानक उन्होंने जाना कि ये तो स्वर्गदूत हैं जो स्वर्ग से आये है। (उत्पति १८.२) मत्ती २८:३, मरकुस १६:५)

सबसे बड़ा स्वर्गदूत लूसीफर भोर का पुत्र था। (यशायाह १४:१२) वह बुद्धि से भरपुर और सर्वांग सुन्दर था। (यहेजकेल २८:१२) इसके विषय हम बाद में और जानेंगे।

तब परमेश्वर ने विशाल आसमान में तारे सूर्य और चाँद निर्माण किये। हम स्वर्गों के स्वर्ग को देख तो नहीं सकते पर तारों के स्वर्ग को देख सकते हैं। जब हम बिलकुल अंधेरी रात में तारों को निहारते हैं तब हमें परमेश्वर की सामर्थ्य और महिमा का भान होता है।

हम लोग अपने रसोई की आग बहुत देर तक जलती हुई नहीं सह रकते पर क्या आपने सोचा है धरती से ९६,०००,००० कि.मी. दूर सूरज है फिर भी उसकी तपन इतनी अधिक है कि यदि हम कुछ घंटे ही उसकी किरणों के नीचे रहे तो कुछ को धूप लग जायेगी। क्या कभी आपने सोचा है कि यह सूरज लगातार जाने कितने वर्षों से जल रहा है। और उसके बुझने का कोई चिन्ह नहीं है।क्या आप जानते हैं कि बहुत दूर ऐसे कई तारे है जो सूरज से बहुत अधिक ठड़े और गरम हैं। क्या आप जानते हैं कि रोशनी? साल में १८६.००० X ६० X २४ X ३६५ मील पार करती है और कुछ तारे पृथ्वी से हजरों प्रकाश – वर्षों दूर हैं? यदि आप इन बातों पर ध्यान करें तो परमेश्वर की बुद्धि और शक्ति से अचीम्भ होंगे, जो इस पृथ्वी के सृष्टा हैं। पवित्रशास्त्र में लिखा है "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा हैं।" (भजन १९:१)

**पृथ्वी:**

स्वर्गों के स्वर्ग, स्वर्गदूतों, स्वर्गीय स्थान और तारों की सृष्टि करने के बाद परमेश्वर ने पृथ्वी की रचना की। इन शब्दों का यही अर्थ है "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"

वैज्ञानिक बताते है कि आकाश के नक्षत्रों की तुलना में पृथ्वी की सबसे नई है। यह बात उत्पत्ति १:१ से मेल खाती है। हम साधारण लोगों की तुलना में वैज्ञानिक अधिक बुद्धिमान, अधिक परिश्रमी और अधिक लगन वाले लोग होते है; और हमें चाहिए कि हम उनका आदर और सन्मान करें। उन्होंने सृष्टि के रहस्यों का उद्घाटन करके हमारे रचियेता की महानता और महिमा को हमारे सामने खोला है। फिर भी कई बार वे भूल कर गये और उनकी, त्रुटियों को कई सौ वर्ष बाद आनेवाले वैज्ञानिकों ने सुधार किया।

किसी भी वैज्ञानिक की तुलना में बाइबल जो परमेश्वर का वचन है, अधिक विश्वसनीय है। यह योजना या इनाम हमारे लिए परमेश्वर की ओर से है। पवित्रशास्त्र में ६६ पुस्तकें हैं, इनमें से ३९ यीशु मसीह के आगमन से पहले और २७ उनके आगमन के बाद लिखी गईं। ये जब ६६ पुस्तकें विभिन्न लोगों द्वारा लिखी गईं। इनमें से कुछ राजा थे जैसे, दाउद और सुलेमान और कुछ राजनीतिज्ञ, भविष्यवक्ता, विद्वान, गड़रिये तथा मछुहारे थे। पहला लेखक मूसा था जिसने यीशू मसीह के जन्म के १५०० वर्ष पहले लिखा और अन्तिम लेखक यूहन्ना जिसने यीशू मसीह के जाने के ९० वर्षों बाद प्रकाशित वाक्य लिखा। पर यथार्थत: इन सब पवित्र पुस्तकों के लेखक परमेश्वर स्वयं थे और ये पवित्र लोग परमेश्वर के सेक्रेटरी या टायपिस्ट थे। पवित्र बाइबल लेखन के विषय में चेले पतरस ने लिखा है – "हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है वह इस घटना से दृढ ठहरा है

और तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है, जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

## अध्याय ५
## सृष्टि की स्थापना

पवित्रशास्त्र में हम पढ़ते हैं कि योना से परमेश्वर ने कहा था – "जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली तब तू कहाँ था? यदि तू समझदार है तो उत्तर दे। उसकी नाप किसने ठहराई, क्या तू जानता है? उस पर किसने सूत खींचा? उसकी नींव कौन सी वस्तु पर रखी गई है? वा किसने उसके कोने का पत्थर बिठाया; जब भोर के तारे आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे? (अय्यूब ३८:४-६)

परमेश्वर की रचना का अनन्त उद्देश्य सदा प्रसन्नता, सुति और महिमागान ही उसके निर्मित लोगों द्वारा होना चाहिए। जब सृष्टि की नींव डाली गई तब संसार में कोई रुकावट नहीं आई पर सब आपस में मेल खाते थे। सब जीव-जन्तु और पूरी सृष्टी आनन्दित थी। भजनसंहिता १४८:३ का लिखनेवाला कहता है – "हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तुति करो; हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो।" ऐसा लगता है मानो एक सुन्दर पेन्टिंग अपने पेन्टर की स्तुति कर रही हो, सारी सृष्टि अपने सृष्टा का गुणगान कर रही हो।

निर्जिव सृष्टी ही नही पर स्वर्ग दूत भी बहुत आनन्दित हुए और "भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे। (अय्यूब ३८:६) भजनसंहिता का लिखनेवाला कहता है – हे सब

दूतों उसकी स्तुति करो, हे सब सेना उसकी स्तुति करों, हे सब सेना उसकी स्तुति कर। (भजन १४८:२)

इस प्रकार हम देखते हैं कि जब परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य के पुत्र प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने को तैय्यारी में सृष्टि की नींव का मुख्य पत्थर रखा गया तब वह बड़ा धन्य अवसर था कि भोर के तारे और स्वर्गदूत आनन्द से चिल्लाने लगे।

परमेश्वर जो भी करते हैं उससे पूरी सृष्टि आराधना और आनन्द करने को प्रोत्साहित होती है। हमें भी चाहिए कि मिलकर परमेश्वर के इन अद्भुत कामों के लिए उनकी स्तुति करें। उनकी बुद्धि कैसी महान और उनकी शक्ति कैसी अपार है।

परमेश्वर ने अय्यूब से जो प्रश्न पूछा हम अब उस पर ध्यान करें। प्रथम प्रश्न "तू कहाँ है?" जब सृष्टि की नींव पड़ी तब अय्यूब पैदा भी नहीं हुआ था। सच में कोई भी प्राणी तब नहीं था। "क्या तू जानता है?" यदि पवित्रशास्त्र चुप रहता तो हमें भी उसके विषय कुछ ज्ञान न होता। इसलिए अब हम कह सकते हैं कि परमेश्पर ही था जिसने हर चीज को इतनी निपुणता से नापा "किसन उस पर सूत खींचा?" हम पेपर पर लाइन खींच सकते हैं पर परमेश्वर ने अन्तरिक्ष में रेखा खींची जिस पर पृथ्वी को सालों साल चलना है। "उसके लिए सिवाना कहाँ बाँधा गया?" पृथ्वी को अन्तरिक्ष में सैंकड़ों मील चलना है पर बड़ी अद्भुत बात है कि उसकी नीव बाँधी गई है ताकि वह उसी रुप से, सैकड़ो वर्षों से अपनी चुरी पर घूम रही है और एक इंच भी नहीं हटी।

जब हम इन सब बातों पर विचार करते है तो परमेश्वर की स्तुति किये बिना रह नहीं सकते। "हे हमारे प्रभु तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है। तूने अपना विभव स्वर्ग पर दिखाया है। जब मैं आकाश को जो तेरे हाथों का कार्य है और चन्द्रमा और तारागण को जो तूने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ, तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उनका स्मरण

रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुचि ले? हे यहोवा हे हमारे प्रभु तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या हो प्रतापमय है। (भजन ८:१, ३, ४, ९)

**चमकीले मणि:**

पवित्र बाइबल के अनुसार जहाँ तक हमारा ज्ञान जाता है हम देखते हैं कि पृथ्वी की सृष्टि के बाद उर पर सर्वप्रथम चलनेवाला अभिषिक्त करुब था। (यहेजकेल २८:१४) इसे लूसीफर भी कहा जाता है। (यशा १४:१२) बह बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है। तू परमेश्वर की अदन नाम बारी में था; तेरे पास आभूषण, मणिक, पद्मराज, हीरा, फीरोजा, सुलैमानी मणि, शब, नीलमणि, मरकद और सोने के पहरावे थे। तेरे ड़फ और बांसुरियाँ तुझी से बनाई गईं थी। जिस दिन से तू सिरजा गया था उस दिन तुझ में कुटिलता न पाई गई; उस समय तक तू अपने सारे चालचलन में निर्दोष रहा। (यहेज २८:१२-१५)

लूसीफर को यह विशेषाधिकार था कि वह चमकनेवाले मणियों के बीच चलता। वह हर तरह के बहुमूल्य मणि पहने था; किन्तु पाप से भरा विचार उसके मन में आया। (यशा १४:१३:१५) में इसका वर्णन है – "तू मन में कहता था कि मैं स्वर्ग पर चढूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारांगण से अधिक उँचा करूंगा, और उत्तर दिशा की ओर पर सभा के पर्वत पर विराजूंगा। मैं मेघों से भी ऊँचे-ऊँचे स्थानों के ऊपर चढूंगा। मैं परम प्रधान के तुल्य हो जाऊंगा। परन्तु अघोलोक में उस गउहे की तह तक उतारा जाएगा।"

इस प्रकार लूसीफर शैतान बन गया। परमेश्वर का शत्रु सर्वोच्च उुँचाई से अघोलोक के गड्ढे में गिर गया। अब वह सब मनुष्यों के लिए प्रलोभन देनेवाला बन गया हैं, ऐसा प्रकाशवान दूत जो आत्मिक अनुभव पाये लोगे को भी धोखा देता है। वह अपने

जीवन का इतिहास हमारे जीवन में दोहराना चाहता है। अति धार्मिक लोगों में भी पतन लाता है। यीशु के बारह चेलों में से एक यहूदास्कर्योती को उसने "नरक का पुत्र" बना दिया। सुरक्षा का एक ही तरीका है कि हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु के समान नम्र बनें और उन पर पुर्णत: आचारित रहें। याद रखें कि परमेश्वर के अतिरिक्त किसी में कोई अच्छाई नहीं है। "वह नम्र लोगों को अपनी शिक्षा देगा, हाँ वह नम्र लोगों का अपना मार्ग दिखाएगा।" (भजन २५:९)

कोई प्रश्न कर सकता है कि, "मनुष्य के लिए सृष्टि को तैय्यार करने में परमेश्वर ने सैकड़ो वर्ष लगाए, इसका क्या प्रमाण धर्मशास्त्र में है?" उत्तर है "कुछ नहीं।" वैज्ञानिक कहते हैं क पृथ्वी को नैसर्गिक नियमों और प्रमाणित संम्भावनाओं के अनुसार अपने इस तापमान पर आने, वातावरण-दबाब अपनाने में बहुत लम्बा समय लगा होगा इत्यादि। ऐसा वैज्ञानिक कहते हैं किन्तु परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। उन्होंने बहुत थोड़े समय में ही सृष्टि की रचना की होगी।

## अध्याय ६

हमने देखा है कि शैतान धरती पर चमकीले मणियों पर चलता था। अत: स्पष्ट होता है कि यह धरती माणिक, पुखरांज, हीरा, फीरोजा, सुलैमानी, यशब, नीलमणि, मरकद और लाल तथा सोने जैसी बहुमूल्य धातुओंसे भरी पड़ी थी। (यहेज २८:३३) शैतान के पतन के बाद चमकीली धरती में विनाशकारी बदलाव आया। अन्त में वह उस स्थिति में आई जिसका वर्णन उत्पत्ति की पुस्तक में है। (उत्पतित १:२) पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी, और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था। पूरी पृथ्वी पानी से ढंकी थी। एक ही विशाल समुद्र ने उसे ढांक रखा था। धरती का एक टुकड़ा भी दिखाई नहीं देता था।

ना तो आकाश में कोई पक्षी था ना समुद्र में कोई मच्छली। पवित्रशास्त्र बताता है कि पृथ्वी बेडौल और सुनसान थी और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था। आप कल्पना कर सकते हैं कि ऐसी पृथ्वी कैसी दिखती होगी ? पृथ्वी के इस वर्णन का तुलनात्मक अर्थ है। हम देखेंगे कि इसका क्या मतलब है।

बाइबल में कई ऐसी घटनाओं का वर्णन है जो मानो सच में घटों फिर भी दृष्टान्तों के समान इनका प्रतीकात्मक अर्थ है। उदाहरणस्वरुप इन लिखित प्रमाणों को देखें; मूसा के समय के इस्त्रायली बच्चे गुलाम थे। वे मिस्त्र में उत्पन हुए थे। मिस्त्री राजा फिरौन उनको स्वतंत्र करने को तैय्यार न था; न मिस्त्र छोड़कर जाने देना चाहता था। पर परमेश्वर की महान शक्ति से मूसा ने उन्हें छुड़ाया और मिस्त्र से निकालकर कनान देश की ओर ले गया जहाँ दूध और मधु की धारा बहती थी। तुलनात्मक रुप में इस्त्राएली बालक आप और मैं हूँ। हम पाप में उत्पन हुए और पाप के दास बने रहे। शैतान अपने कब्जे से हमें छूटने देना नहीं चाहता है किन्तु प्रभु यीशु मसीह हमारी उद्धारकर्ता आये और इस संसार के पापियों को बचा रहे हैं। शैतान के बन्धन से पाप की दासता से हमें बचाकर यीशु मसीह शान्ति और आनन्द की ओर ले जा रहे हैं। इस प्रकार इस्त्राएलियों की दासता का इतिहास और हमारी आत्मिक स्थिति मिलती – जुलती हैं।

इसी प्रकार ध्यान से बाइबल का अध्यन करनेवाले परमेश्वर के लोगों ने देखा है कि पृथ्वी का वर्णन-बेडौल के लोगों  ने देखा है कि पृथ्वी का वर्ण-बेडौल को अर्थ है (सुन्दरता रहित) सुनसान और अंधकारपूर्ण का अर्थ है – वे मनुष्य जिनकी पाप में पड़ने के कारण हालत बहुत बुरी है। आदम के और उसके वंशजों के पाप।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि सुन्दरता रहित सुनसान अंधकार आदि शब्द प्रत्येक पापी का वर्णन करते हैं जो उसे बेडौल बना देते है। वे स्वंय को सुन्दर वस्त्रों और आभूषणों से चाहे ढाँक लें पर उनकी आंतरिक कुरुपता बनी रहती है।

दूसरी बात – एक पापी खाली, सुनसान रहता है – प्रसन्नता, आशा और शान्ति रहित। कई लोगों ने स्वीकार किया है कि धन, स्वास्थ्य सांसारिक वैभव होने पर भी उनके जीवन खाली दिखावा है, निरुद्देश्य हैं।

तीसरी बात – एक पापी का जीवन अन्धेरा है। वह नहीं जानता कि कहाँ जा रहा है। नहीं जानता कि इस संसार में क्यों आया और मृत्यु के बाद कहाँ जायेगा। यह भी ज्ञान नहीं कि उसका स्वाभाव कितना बुरा है, अपनी बुरी आदतों और मूर्खता से अपना कितना बुरा कर रहा है, स्वयं पर कितना विनाश ला रहा है और परिवार का बुरा कर रहा है। वह अन्धकार में चलता है और उसके हृदय में भी अन्धकार है।

## अध्याय ७

घटित घटनाओं को इतिहास कहते हैं। भविष्य में होनेवाली घटनाओं का वर्णन करना भविष्यवाणी कहलाता है। बाइबल में इतिहास और भविष्यवाणी दोनो हैं। बाइबल में लिखे इतिहास का अन्त धार्मिक प्रचार के समय हुआ जो यीशु मसीह के लगभग १०० साल बाद का है पर भविष्यवाणियों का समय आज तक चल रहा है, और संसार के अन्ततक चलेगा। यह हमें बहुत कुछ बताता है कि आगामी युगों में क्या होगा; इसी लिये हम बाइबल को युगों के इतिहास की कहानी कहते हैं।

उत्पत्ति की पुस्तक मानव के इतिहास की २३०० वर्षों की अवधि को बताती है जब कि बाइबल के अन्य अध्याय नये नियम तक के १६०० वर्षो की कहानी है। अत:

हम देखते है कि उत्पत्ति कितनी महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें चिन्हात्मक उन बातों का सारांश है जो परमेश्वर मनुष्य के लिए करना चाहता हे, इसमें आप भी, शामिल हैं। प्रथम दिन परमेश्वर ने संसार की ज्योति को रचा अपने वचन से।

बाइबल परमेश्वर का वचन है। प्रभु यीशु को भी वचन कहा जाता है। जब एक पापी बाइबल पढ़कर विश्वास करता है और यीशु को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता मानता है तब उसके हृदय में परमेश्वर का प्रकाश आता है और वह नया मनुष्य बन जाता है। इसके उसका पूरा जीवन बदल जायेगा और उसका हृदय स्वर्गीय शान्ति और आनन्द से भर जायेगा।

परमेश्वर ने जब प्रकाश को बनाया उसी समय उसे अन्धकार से अलग कर दिया। जब परमेश्वर की ज्योति आपके हृदय में आती है तब आप अन्धकार के पापी कामों को फिर कभी पसन्द नहीं करते हैं। आप फिर अन्धकार` बच्चे का साथ पसन्द नहीं करते; जो प्रभु यीशु से प्रेम नहीं करते हैं और न पापों से पश्चाताप् करते हैं।

पद ४ में हम पढ़ते हैं, और परमेश्वर ने उजियारे को देखा कि अच्छा है। जब हम पापों से पश्चाताप् करते और यीशु को मुक्तिदाता करके ग्रहण करते हैं तो यह परमेश्वर को कितना आता है। लूक में हम पढ़ते है १ २:१ ० इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।

परमेश्वर का पहले दिन का पहला कार्य उनके उद्धार के कार्य के प्रथम कदम को दर्शाताहै।

दूसरे दिन परमेश्वर ने आकाश या अन्तरिक्ष को बनाया। आकाश के नीचे पूरी धरती पर बड़े समुद्र बन गये। आसमान में भी बदलों के रुप में जल था।

इस दिन के कार्य या सृष्टि के विषय नहीं लिखा है कि परमेश्वर ने देखा यह अच्छा है। सिर्फ दूसरे दिन ही ऐसा क्यों हुआ?

आकाश को वायु भी कहा जाता है। शैतान "वायु की शक्ति का राजकुमार"है। (इफी. २:२) प्रभु के कई सेवकों का विचार है कि वायु की सृष्टि होते ही शैतान और उसके दुष्ट दूतों ने वायु पर अपना कब्जा जमा लिया ताकि परमेश्वर के सब अच्छे और महान कार्यों में बाधा डालें। यह प्रभु ने पहेले ही देख लिया था, इसिलिए वे नहीं कह सके "अच्छा है।"

परमेश्वर ने बेडौल और अन्धकारपूर्ण पृथ्वी पर सृजन का नया कार्य आरम्भ किया ही था कि उसे सुन्दर और महिमामय बनाये ततकाल, दूसरे ही दिन शैतान ने अपना कुकार्य आरम्भ कर दिया।

इसमें हम एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त पाते हैं। किसी मनुष्य में उद्धार का कार्य परमेश्वर ज्योहि आरम्भ करते हैं कि शैतान नाश कार्य आरम्भ कर देता है। इसीलिए मूसा की अगुवाई में जब इस्रास लियों ने मिस्र को छोड़ा ही था कि फिरौन ने अपनी सेना उनका पीछा करने को भेजी ताकि उन्हें पकड़ कर फिर दास बनाले। (निर्गम १४:५-६) बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ ही था कि शैतान ने हिरोदेस पर कब्जा कर लिया ताकि इस पवित्र बालक को मार डाले। (मत्ती २:१६) आसमानी पिता ने जैसे ही कहा "यहा मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रसन्न हूँ।" शैतान प्रभु यीशु मसीह को एकान्त में ले गया ताकि उन्हें परीक्षा में डाले- यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन पत्थरों से कह कि रोटियाँ बन जायें (मत्ती ४:३) फिर ज्योंहि परमेश्वर का नियुक्त हथियार मानव पुत्र उत्पन्न हुआ, अजगर उसे निगलने को तैय्यार हुआ। आप पापमय जीवन छोड़कर उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पीछे चलना आरम्भ करते ही हैं कि शैतान और उसके दुष्ट दूत आपके विरुद्ध उठ खड़े

होते हैं और आपको निरुत्साह करते हैं। मित्र शत्रु बन जाते हैं। सम्बधी उपेक्षा कर सकते हैं, संसार पीड़ित कर सकता है तथा अनेक परीक्षाएँ आपके सामने आ सकती हैं।

यह सत्य है कि हमारा एक बड़ा शत्रु है, पर यह भी सत्य है कि हमारा एक अधिक सामर्थी उद्धारकर्ता है। यदि छुटकारा देनेवाले को आप अपने हृदय में आने दें तो वह आपको पूर्ण विजय देगा "हे बालकों तुम परमेश्वर के हो और तुमने उनपर जय पाई है क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है।" प्रभु यीशु आपको पाप के दण्ड से बचाना ही नहीं चाहते किन्तु अपनी सारी सृष्टि पर आपको विजय बनाना चाहते हैं।

इस प्रकार दूसरा दिन आपके उद्धार के लिए परमेश्वर की दूसरी योजना का दूसरा कदम है। वे आपके बड़े शत्रु के प्रति आपको सतर्क करना चाहते हैं और सिखाना चाहते हैं कि यीशु मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा आप कैसे विजयी हो सकते हैं।

## अध्याय ८

तीसरे दिन परमेश्वर ने हरी घास, छोटे पेड़ और फलदायी वृक्षों को सूखी भूमि पर उगाया।

स्मरण करें कि दूसरे दिन तक जल पूरी धरती को ढाँके था और कँही भी सूख भूमि दिखाई नहीं देती थी। अब परमेश्वर के अनुग्रह से जल हट गया और सूखी भूमि दिखाई दी। तुरन्त पृथ्वी के कुछ भाग गडहे बन गये और कुछ ऊपर उठ गये। इस प्रकार बड़ भू-खण्ड बने जो समुद्रों से घिरे थे।

यदि आप समुद्र तट पर खड़े हो तो समुद्र की लहरों को अपनी ओर लुड़ककर आते देख सेकते हैं। वे इतने वेग से आपकी ओर लपकती है कि उन्हें देखकर डर लगता

है, मानो पलभर में वे आपको निगल लेगी। पर किसी रहस्यमय कारण से धरती को छूते ही वे एकदम शान्त हो जाती है, और थोड़ा जल ही आपके पैर छूता है।

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर कहता है, "फिर जब समुद्र ऐसा फूट निकला मानो वह गर्भ से फूट निकला, तब किसने द्वार मूंदकर उसको रोक दिया। जबकि मैंने उसको बादल पहिनाया और घोर अन्धकार में लपेट दिया और उसके लिए सिवाना बाँधा और यह कहकर बेड़ें और किवाड़े लगा दीं कि यहीं तक आ, और आगे न बढ़, और तेरी उमड़नेवाली लहरें यहीं थम जाएँ?"

प्रतीकातमक रुपसे धरती का जलाशय से ऊपर निकल आना 'पुन:जिवित' होने को दर्शाता है। तीसरे दिन परमेश्वर ने इस पुन:जिवित धरती को दिखाया ताकि इसपर परमेश्वर जीवन उत्पन करे। प्रभु की आज्ञा से इस पर हरी घास, छोटे पेड़ और फलदायी वृक्ष दिखने लगे उनके अपने-अपने बीज थे ताकि वे नया हरी घास, पेड़-पौधे और फलदायी वृक्ष उगा सकें। इस प्रकार धरती से लगातार पुर्नजिवित होने और अंकुरित होने का क्रम बना रहे।

हम जब प्रभु यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण कर लेते हैं तो हमारे जीवनों में पुर्नजिवन की शक्ति आ जाती है। हम विजयी होना, फलदायी होना सीख लेते हैं, चाहे हम कितनी ही परीक्षाओं और कष्टों से घिरे क्यों न हों।

हम जब अपने पापों से पश्चाताप् करके प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण कर लेते हैं तो तुरन्त प्रभु से हमारा मिलाप हो जाता है। उनकी मृत्यु, गाड़ेजाने और जीवित होने में हम एक नया मनुष्य बन जाते हैं। "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गईं, देखो वे सब नई हो गई।"

चौथे दिन परमेश्वर ने सूरज, चाँद और तारे बनाये कि वे पृथ्वी पर प्रभुता करें और चिन्ह, मौसम, दिन तथा वर्षों को उत्पन्न करें।

परमेश्वर पूर्ण सिद्धता का प्रभु है। सूरज चन्द्रमा और तारों की अपनी धुरी और कार्य हैं। ये आपसी तालमेल को पूर्ण सिद्धता से निभाते है कि मनुष्य का भला करें। इसी प्रकार हमें अपनी बुलाहट को पूर्ण ईमानदारी से निभना चाहिए और प्रभु यीशु की अगुवाई में अन्य मसीहियों के साथ सम्पूर्ण एकता के साथ कार्य करना चाहिए।

सूर्य यीशु मसीह का प्रतीक है। चन्द्रमा कलीसिया का प्रतीक तथा तारे व्यक्तिगत विश्वासियों के समान हैं जो गवाही देते हुए प्रभु के लिए चमकते हैं। "तब सिखनेवालों की चमक आकाश मण्डल की सी होगी, जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों की नाईं प्रकाशमान होंगे।" (दानिएल १२:३)

परमेश्वर के चौथे दिन की रचना हमें सिखाती है कि हम जो प्रभु की सन्तान है; चर्च में उसकी आज्ञा को मानें पर पहले यह समझे कि चर्च का क्या अर्थ है – कलीसिया का मसीह पर निर्भर रहना और उसकी प्रभुता में चलना। परमेश्वर की योजनानुसार पूरे संसार के लिए एक ही कलिसिया है; अलग-अलग कई नहीं; जैसा वर्तमान समय में लोग सोचते हैं। इस कलीसिया में वह सब विश्वासी हैं जो अनन्त जीवन पा चुके हैं। यह भेद तो बड़ा है पर मैं मसीही कलीसिया के विषय कहता हूँ (इफी ५:३२)

परमेश्वर नही चाहता है कि हर विश्वासी जो उसे भाता है और ठीक जंचता है; व्यक्तिगत रुप में व कार्य करें। (न्यायियों २१:२५) हर प्रचारक स्वतंत्र होकर अपनी इच्छानुसार चले या स्वतंत्र कलीसियाएँ आपस में प्रतियोगिता करते हुए एक-दुसरे से झगड़ते रहें।

अपनी कलीसिया के लिए परमेश्वर की, योजना महान और महिमामय है। नरक के द्वार इस योजना के नाश में लगे हैं। यदि हम वर्तमान की कलीसियाओं को देखे तो लगता है कि सब नरक के द्वारों को सफल बनाने में लगे हैं। यीशु ने तो कहा है "इस पत्थर पर मैं अपनी कलीसिया स्थापित करुँगा और अधोलोक के फाटक उसपर प्रबल न होंगे।" जब छोटा दाउद विशाल गोलियत से लड़ने निकला तब उसके मुख पर विश्वास की चमक थी। बाइबल कहती है – "परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।"

## अध्याय ९

पाँचवे दिन परमेश्वर ने आकाश में उड़नेवाले पक्षियों और जल में रहनेवाले जन्तुओं को बनाया। पाँचवे दिन निर्मित जीव चल-फिर सकते थे उड़ सकते थे। वे तीसरे दिन रचे गये पेड़-पौधों और हरी घाससे बडे थे। निर्गमन १:२१ में बड़े या विशाल शब्द का प्रयोग हुआ हैं। बहुतायत शब्द पर २० और २१ में दो-दो बार लिखा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाँचवे दिन सृष्टि का फलना-फूलना बहुत उँचे, बड़े और बहुतायत के रुप में हुआ। यह तीसरे दिन की सृष्टि से वाही अधिक फलदायक था।

यह दर्शाता है कि उद्धार पाने के दिन से हमें फलवन्त होना चाहिए तथा आत्मिक वृद्धि के साथ-साथ हमें बहुत अधिक फलदायक हो जाता चाहिए।

हमने देखा कि तीसने दिन सूखी धरती अगर आई थी पर उसी दिन से वह फलवन्त हो गई। यह दर्शाता है कि, जिस दिन हमारा नया जन्म होताहै उसी दिन से हमें फलवन्त हो जाना चाहिए। एक कुँए के पास एक सामरी स्त्री थी जिससे प्रभु यीशु ने बातें की। (यूहन्ना ४:६) प्रभु यीशु ने उसे दर्शाया कि वे मसीहा है। वह स्त्री तुरत्न अपना मटका कुँए पर

छोड़कर अपने गाँववालों को यह बताने दौड़ी गई कि उसने मसीहा को देखा है। वह लोगों को पकड़कर लाई कि स्वयं चलकर देखें। (यूहन्ना ४:२९-३०) ज्योहि आप अपना हृदय परमेश्वर को सौंपते हैं, त्योंहि दूसरी आत्माओं को परमेश्वर की ओर ले जायें। वह शिक्षा हमें मिलती है तीसरे दिन की सृष्टि से।

चौथे दिन की सृष्टि से हमने सीखा है कि कलीसिया में परमेश्वर की विधियों को पहचाने और समझें। हम परमेश्वर के नेतृत्व के अधीन आयें और कलीसिया में अपना स्थान ग्रहण करें; तभी हम अधिक फलदायक बनेंगे। ये फल और बड़े, उत्तम और बहुतायत के होंगे। यही शिक्षा हम पाँचवे दिन से पाते है।

यीशु के चेले पौलुस के जीवन से भी हमे यही शिक्षा मिलती है। पौलुस ने यीशु को अपना स्वामी और उद्धारकर्ता ग्रहण किया था। और तुरन्त वह यीशु का प्रचार करने लगा। (प्रेरितों ९:२०) यह तीसरे दिन की फलवन्तता है। आगे चलकर परमेश्वर ने उसे सिखाया कि अपनी स्वतंत्र इच्छानुसार प्रचार ना करे किन्तु प्रभु अन्य सेवकों के साथ मिलकर उसकी सेवा करे। पवित्र आत्मा की अगुवाई तथा उसके दासों के साथ एक मन होकर सेवा करे। यह चौथे दिन की शिक्षा है। (प्रेरितों १३:२, ३)

इसके बाद से चेले पौलुस की सेवकाई बहुत आशीष का कारण बनी। कई आत्माएँ जीती गई, कई कलीसियाएँ एशिया और यूरोप में स्थापित की गई। यह पाँचवे दिन की फलवन्तता बनीं।

पाँचवे दिन परमेश्वर ने एक आशीष दी। यदि तुम आत्मिक उन्नति करो और बहुत फललाओ तो वह तुम्हें विशेष आशीषें देगा। (यूहन्ना १५:९)

छटवें दिन परमेश्वर ने रेंगनेवाले तथा दूसरे जन्तुओं को बनाया, मनुष्य को भी

“फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार अपनी समानता में बनाये, ... अधिकारी बनायें (उत्पत्ति १:२६-२९)

परमेश्वर ने मनुष्य की रचना वैसे नहीं की जैसे अन्य जीव-जन्तुओं की की थी। नर अन्य प्राणियों से बढ़कर हो। परमेश्वर ने उसे अपने स्वरुप में रचा। आदम के पापों के कारण परमेश्वर का स्वरुप और समानता नष्ट हो गई किन्तु यीशु से उसे पुनः प्राप्त हुईं। एक दिन हम यीशु को देखेंगे और उस दिन उनके स्वरुप में होंगे (१ युहन्ना ३:२) हम भी उनके स्वरुप और समानता में होंगे।

हम पढ़ते हैं, “और परमेश्वर ने कहा वे अधिकार रखें।” परमेश्वर का उद्देश्य है कि हम उसके साथ राज्य करें। इस संसार में हम जयवन्तों से भी बढ़कर है। (रोमियों ८:३६) अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

अत: छटे दिन की शिक्षा यह है कि प्रभु चाहते हैं कि हम उनके साथ सिंहासन पर बैठकर राज्य करें।

## सातवें दिन परमेश्वर ने सारे कामों से विश्राम किया –

प्रभु ने सृजन का अपना कार्य समाप्त किया। थकने के कारण उन्होने विश्राम नहीं किया। हमारे कारण विश्राम किया। इस प्रकार परमेश्वर ने हमें ६ दिनों का सप्ताह दिया। संसार के हर खंण्ड में ६ दिनों का सप्ताह होता है और लगभग हर देश में कर्मचारियों को सप्ताह में एक दिन का विश्राम मिलता है।

भिन्न-भिनन देशों में विभिन्न कैलेन्डर होते हैं। सबके महीने और वर्ष एक साथ आरम्भ नहीं होते। अंग्रेजी नव वर्ष, यहूदी नव वर्ष, तेलगु नव वर्ष, तमिल नव वर्ष विभिन्न

दिनों पर होते हैं। इनके वर्षों के दिनों में भी थोड़ा अन्तर होता है पर हर सप्ताह ६ दिनों का ही होता है तथा सप्ताह का प्रथम दिन एक सा होता है। यह आदम के समय से होता आ रहा है।

सातवें दिन परमेश्वर ने विश्राम किया। इस सातवें दिन का आत्मिक अर्थ यह है कि परमेश्वर चाहते हैं कि हम उनके विश्राम में प्रवेश करें। (इब्रानियों ४:९-११) वे प्रेम से हमें बुलाते हैं कि अपनी सारी चिन्ताओं का भार उन पर डाल दें और हर बात में उनपर भरोसा रखें। क्या ही धन्य है परमेश्वर पर भरोसा रखना।

प्रभु यीशु आपको आज निमंत्रण दे रहे हैं – "हे सब बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। (मत्ती ११:२८) आज ही उनके पास आ जाओ क्योंकि वे आपको सम्पूर्ण विश्राम और शान्ति देंगे।

आयें हमारे लिए क्रमशः उन्नत योजना पर सारांश में पुर्नविचार करें जो परमेश्वर ने हमारे लिए तैय्यार की है। प्रथम दिन ज्योति और उद्धार पाना। दूसरे दिन युद्ध करना और जयवन्त होना, तीसरे दिन पुर्नजिवित होना और फलवत होना, चौथे दिन यीशु की अगुवाई में आना और कलिसिया में अपना स्थान ग्रहण करना। पाँचवे दिन बहुतायत का जीवन पाना और बहुतायत से फलवन्त होना। छटे दिन-यीशु के साथ सिंहासन पर बैठकर राज्य करना और अधिकारी होना। सात वें दिन परमेश्वर में सम्पूर्ण शान्ति और आनन्द के साथ विश्राम करना।

## अध्याय १०
## आदम और हवा

जीवित मनुष्यों में आदम सबसे प्रथम पुरुष था। यहोबा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नयनों में जीवन का श्वास फूंक दिया, और आदम जीवता

प्राणी बन गया। (उत्पत्ति २:६) तब परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया। और यहोबा ने उस पसली को जोआदम में से निकाली थी स्त्री बना दिया और उसको आदम के पास ले आया। और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है सो इसका नाम नारी होगा। इस कारण पुरुष अपने पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे। (उत्पत्ति २:२१-२४) इब्रानियों।

हाँ आदम भूमि की मिट्टी से रचा गया ये कैसा नम्र निर्माण था। अत: परमेश्वर के सामने मनुष्य को कितना नम्र होना चाहिए वो जो पृथ्वी और आकश के सृष्टा हैं। "तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जायेगा।" (उत्पत्ति ३:१९) आदमी चाहे अति स्वस्थ, शक्तिशाली और रुपवान हो और एक स्त्री अति गौरवांगी और रुपवती हो किन्तु एक दिन दोनों कमजोर, मुरझाये से, और रोगी हो जायेंगे। और अन्त में मर जायेंगे। फिर भी कई लोग अपने नम्र निर्माण को भूल जाते हैं और बहुत घमण्डी बन जाते हैं। वे परमेश्वर के विषय में अनादर से बोलते हैं यहाँ तक कि उनके अस्तित्व से इन्कार करते हैं। "मूर्ख ने अपने मन में कहा – परमेश्वर है ही नहीं (भजन ५३:१) यदि हम पहले आदम से कहे गये परमेश्वर के वचनों को केवल स्मरण करें" "तू मिट्टी ही तो है और मिट्टी में फिर मिल जायेगा।" तो हमारे लिए आसान होगा कि हम अपने पापों से पश्चाताप करें और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उद्धार पायें।

आदम की एक पसली निकालने से पहले परमेश्वर ने उसे गहरी नींद में डाल दिया क्योंकि इस ऑपरेशन के समय वे नहीं चाहते थे कि आदम को थोड़ा भी दर्द हो। परमेश्वर का प्रेम कितना विशाल है। "क्योंकि वह मनुष्यों को अपने मन से न तो दबाता है और न दु:ख देते तो यह केवल हमें अपनी बड़ी आशीषों की ओर ले जाने के लिए आवश्यक

होता है। कई बार हम प्रभु के प्रयोजन को नहीं समझते इसीलिए उन्होने कहा है "मैं जो करता हूँ, तू अभी नहीं जानता परन्तु इसके बाद समझेगा।" (यूहन्ना १३:६)

प्रिय मित्रों आप शायद अपने जीवन में किसी दु:ख से गुजर रहे होंगे। क्या आप समझ नहीं सक रहे हैं कि इन कष्टों को आप पर क्यों कर परमेश्वर आने दे रहे हैं? एक बात सत्य है कि परमेश्वर ने हमसे इतना अधिक प्रेम किया कि अपने एकलौते पुत्र को हमारे बदले क्रूस पर मरने दिया। "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सबके लिए दे दिया; वह उसके साथ हमें और कुछ क्योंकर ना देगा? (रोमियों ८:३२) तो यदि आप परमेश्वर के इस सौदे को नहीं समझ सकते हैं तो उत्तम होगा कि उसके प्रेम पर विश्वास करें।

आदम जानता था कि हवा को परमेश्वर ने कैसे उसकी पसली से बनाया है इसलिए वह हवा से विशेष प्रेम करता था और कहा "अब यह मेरी हड्डीयों में की हड्डी और मेरे माँस में का माँस है (उत्पत्ति २:२३) हर पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी का इसी प्रकार महत्व समझे। विवाह परमेश्वर की योजना है। यहोबा ने कहा "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं। (उत्पत्ति २:१८) परमेश्वर की सन्तान के लिए विवाह बहुत पवित्र सम्बध है। पुरुष और स्त्री का यह मिलन तीन रुपों में होता है – आत्मा, प्राण और देह का। जिन लोगों ने अपने पापों से सचमें पश्चाताप् करके प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता ग्रहण किया है वे ही सुखी वैवाहिक जीवन की महान आशीषों को समझ सकते और उनका आनन्द ले सकते हैं। अधिकांश लोगों के लिए विवाह केवल शारीरिक सम्बन्ध है। कई के लिए शायद मन और आत्मा का मिलन होगा किन्तु परमेश्वर की सन्तान के लिए यह एक आत्मिक मिलन भी है, शरीर, आत्मा और प्राण का सुखदायी मिलन।

परमेश्वर की योजना के अनुसार सुखी वैवाहिक जीवन की आशीषे एक पूर्व स्वादानन्द, एक दर्शन और एक चिह्न है उस पवित्र बन्धन का जो प्रभु यीशु मसीह अपनी दुल्हन-कलीसिया के साथ रखना चाहते हैं। बाइबल की अन्तिम पुस्तक के अन्तिम अध्याय में हम दुल्हन – कलीसिया को साथ परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के विवाह के बारे में पढ़ते हैं।

"और उसने मुझसे कहा, यह लिख, कि धन्य वे हैं जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए है" (प्रकाश १९:९) परमेश्वर की विधियाँ और उद्देश्य अति महान और सुन्दर है वे मानव समझ से परे हैं। क्या आप इन आशीषों को पाना नहीं चाहते ? क्या मेम्ने के विवाह-भोज में शामिल होना नहीं चाहते ? यदि हाँ, तो इसी समय अपने सारे पापों से पश्चाताप् करें और प्रभु यीशु मसीह को अपने हृदय में आने को कहें।

## अध्याय ११

'युगों की कहानी' में हम ६००० वर्षों की छलांग लगायेंगे। यह प्रथम पुरुष आदमी से यीशु के समय तक, का समय है ४००० वर्ष तथा यीशु मसीह के बाद से वर्तमान समय तक लगभग २००० वर्षो का है।

हम जब अन्तिम दिनों की कहानी बता रहे हैं तब ये घटनाएँ और अवधियाँ हमारे सामने आती है:

१. अन्तिम दिन और यीशु के पुर्नरागमन की समीपता को दर्शानेवाले चिन्ह।

२. संतों का उठा लिया जाना।

३. ६ वर्षों तक क्लेश का समय।

४. खीष्ट विरोधी का प्रगट होना।

५. महिमा के साथ यीशु का आना।

६. हजार वर्ष तक धरती पर यीशु का राज्य।

७. अन्तिम लड़ाई और शैतान पर दण्ड की आज्ञा।

८. सब अविश्वासियों पर श्वेत सिंहासन द्वारा दण्ड।

९. सम्पूर्ण जगत का नाश

१०. नया स्वर्ग और नयी पृथ्वी

११. परमेश्वर पुत्र द्वारा सिद्ध राज्य का स्वर्गीय पिता को सौंपा जाता

१२. युगों का आना

निश्चित रुप से हमें कोई नहीं बता सकता कि संसार ा क्या होने वाला है, अभी आने वाले दिनों के विषय भी नहीं फिर 'आगामी युगों' के विषय बताना तो मानव बुद्धि की शक्ति से परे है। अत: हमारी कहानी पवित्र बाइबल के वचनों पर ही पूर्णत: आधारित है। कृपया दिये गये पवित्र शास्त्र के वचनों को ध्यान से पढ़ें।

## अन्तिम दिन

पवित्रशास्त्र के अनुसार अब हम अन्तिम दिनों में है। प्रमाणस्वरुप २ तिमुथी ३:१-५ पढ़ें – "यह जान रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आयेंगे। क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र। मयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर और भले के बैरी ठीठ (क्रोधी) घमण्डी और परमेश्वर के नहीं वरन सुख विलास ही के चाहने वाले होंगे। वे भक्ति का भेष

तो धरेगे पर उसकी शक्ति को न मानेंगे, ऐसे से परे रहना। अन्तिम दिन अन्य युगों की अपेक्षा अधिक भक्तिहीनतापूर्ण होंगे।

कई लोगों का मत है कि शिक्षा और सभ्यता का ज्यों-ज्यों विकास होगा, निरक्षरता और अज्ञानता त्यों-त्यों समाप्त होती जायेगी और राजनितिक सुधार होने से सन्सार और बेहतर हो जायेगा; हम उन्नत और शान्ति पूर्ण सुखी दिनों की आशा कर सकेंगे। किन्तु यदि हम वर्तमान दिनों के संसार को देखें तो हर देश में हर स्थान पर अशान्ति की बढ़ती पायेंगे, अनुशासन, भ्रष्टाचार और क्रूरता के बादल मंडरा रहे हैं तथा अन्तरिक्ष को भयभीत कर रहे हैं। कभी भी हमपर तूफान टूट सकता है और बुरे दिन आ सकते हैं।

क्या भारत में युद्ध होगा? क्या विश्वयुद्ध होगा? क्या परमाणु हथियारों का प्रयोग होगा? हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमारे देश में उद्धार और शान्ति लायें। पर हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते कि संसार का अन्त समीप है और हम अन्तिम दिनों में हैं।

'माता-पिता के प्रति अनाज्ञाकारिता' शब्द पर विचार करें जिसका उल्लेख बाइबल में हैं। मैने अक्सर पालकों को इस पर बातें करते सुना है। आजकल अधिकांश बच्चों का व्यवहार अपने माता-पिता के प्रति, विद्यार्थियों का शिक्षकों के प्रति, और युवकों का वयस्कों के प्रति व्यवहार लगभग पचास वर्ष पहले की तुलना कहीं अधिक चौका देने वाला है। यह एक और चिन्ह है कि अब हम अन्तिम दिनों में हैं।

हर काले बादल के पीछे अभी भी आशा की एक किरण है। बाइबल में लिखा है कि अन्तिम दिनों में संसार में पाप बहुत बढ़ जायेगा, पर यह भी लिखा है कि कुछ बचे हुए होंगे जो पवित्र और पवित्र, धार्मिक और धार्मिक होते जायेंगे। "भविष्यवाणियो के पूरा होने का समय निकट है। जो अन्याय करता है, वह अन्याय करता रहे, जो मलिन है मलिन बना रहे और जो धर्मि है धर्मी बना रहे, जो पवित्र है वह पवित्र बना रहे। (प्रकाश २२:११) पर

खेद है कि यह स्थिति थोड़े समय की होगी क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है और बहुतेरे है जो उसमें प्रवेश करते हैं। क्योंकि संकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते है।" (मत्ती ६:१३-१४)

प्रिय मित्रों इन दो दलों में से आप किससे सम्बन्धित हैं? क्या आप उस छोटे झुन्ड के साथ रहने का फैसला करना न चाहेंगे जो पवित्र जीवन बिताने को इच्छुक हैं और परमेश्वर को भावता हुआ जीवन बिताना चाहते हैं? क्या आप अपने सारे पापों से पश्चाताप् करके प्रभु यीशु को अपने हृदय में ग्रहण करना ना चाहेंगे ताकि वे आपको एक नया मनुष्य बना दें? ये अन्तिम दिन हैं अत: देरी ना करें।

## अध्याय १२

### यीशू के दूसरे आगमन के चिन्ह

पवित्रशास्त्र बताता है कि प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले अन्तिम दिनों के कुछ चिन्हों का पूरा होना आवश्यक है। ये बहुत विशाल, समझ से परे या देखने में कठिन नहीं होंगे। यदि आप अपनी आँखे और कान खुले रखें तो उन्हें देख और समझ सकेंगे, चाहे आप संसार के किसी भी भाग में क्यों न रहते हों। क्या कभी देखा है कि बिजली आकाश में एक स्थान से दूसरे स्थन तक चमकती तो कैसे दिखाई देती है? इसी प्रकार ये चिन्ह पूरे होंगे और सम्पूर्ण जगत इन्हें देख सकेगा। बाइबल के तीन मुख्य परिच्छेदों में वर्णित इन चिन्हों को आइये हम देखें।

हमारा पहला परिच्छेद यीशु के जन्म से ५३४ वर्ष पूर्व दानिएल द्वारा लिखा गयाहै और पुराने नियम में पाया जाता है।

दानिएल १२:४ – अन्त समय में बहुत लोग पूछ-पाछ और ढूंढ-ढाँढ़ करेंगे और इससे ज्ञान बढ़ भी जायेगा।

यहाँ हम देखते हैं –

१) अन्तिम दिनों में यात्राओं की संख्या बहुत बढ़ जायेगी अर्थात् – बहुत लोग पूछ-पाछ और ढूंढ-ढाढ़ करेंगे। बीसवी शताब्दी में कारों, ट्रेनों, और हवाईजहाज जैसी मशीनों को जाना है जिससे यात्राओं में बहुत सहायता मिली है।

२) ज्ञान बढ़ जायेगा – इस युग में यह बात कई रुपों में पूर्ण हुई है जैसे – विज्ञान, चिकित्सा और ज्योतिष के क्षेत्र में ज्ञान अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है।

(२)

दूसरा परिच्छेद यह है – (लूक २१:२४-२८) “जब तक अन्य जातियों का समय पूरा ना हो यरुशलेम अन्य जातियों से रौंदा जायेगा। और सूरज, चाँद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे और पृथ्वी पर देश-देश के लोगों को संकट होगा क्योंकि वे समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल से घबरा जायेंगे। और भय के कारण संसार पर आनेवाली घटनाओं की बात देखते-देखते लोगों के जी में जी न रहेगा क्योंकि आकाशकी शक्तियाँ हिलाई जायेंगी। तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादलों पर आते देखेंगे। जब ये बातें होने लगें तो सीधे खड़े होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट है।”

(३)

यरुशलेम अन्य जातियों से रौंदा जायेगा (ये यहूदी नहीं होंगे) यह पूरा होगा (अन्त आयेगा) "प्रभु यीशू द्वारा ३६ वर्षों बाद ये शब्द कहे गये ये अर्थात् ६० ए.डी. से यहूदी बिखरा दिये गये युरुशलेम से और उनके मन्दिर को आग से जला दिया गया। यहूदियों को दूसरे देशों में रहना पड़ा और कई बार बहुत सताव सहना पड़ा। शताब्दियों के बाद शताब्दियों बीतीं। परमेश्वर के लोग राह देखते रहे कि कब अन्यजातियों का समय पूरा होगा और कब यहूदी लोग युरुशलेम को लौटेंगे? कई बार ऐसा लगा मानो दिये गये चिन्ह कभी पूरे नहीं होंगे। ऐसा तो नहीं होगा कि यहूदी दूसरी जातियों के साथ मिल जाएँ और एक स्वतंत्र राज्य के रुप में उनका रहना समाप्त हो जाए, जैसे एशिया के हूये और आर्य जातियों के साथ हुआ। दो हजार वर्ष एक बहुत लम्बा समय है इसमें इस चिन्ह का समाप्त होना संभव था।

पर एक आश्चर्य हुआ। यहूदी सैकड़ो वर्षों तक सुरक्षित रहे। कुछ दशक पहले वे फिलिस्तीन को लौट इस्राएली राज्य बना सके। इसमें यरुशलेम का थोड़ा सा ही भाग आता है। कुछ समय पूर्व ही ६ दिनों के युद्ध के बाद यरुशलेम का शेष भाग भी ये अपने कब्जे में कर सके।

पवित्र बाइबल भी शायद आश्चर्य से इन घटनाओं को देख रही होगी। इसका क्या अर्थ है? क्या लूक २१:२४ में वर्णित 'अन्यजातियों के समय' की शातें पूरी हो गई? क्या परमेश्वर की घड़ी की सुइयाँ आगे बढ़ गई और परमेश्वर के टाइम-टेबल की एक और बात पूरी हो गई और हम मसीह के दोबारा आगमन के और समीप आ गये है?

(४)

"सूरज और चान्द और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे।"

(५)

"और पृथ्वी पर देश-देश के लोगों को संकट होगा।"

(६)

"समुद्र और लहरें गरजने और कोलाहल करने लगेंगी" – (ऐसा साधारणत: नहीं होता(

(७)

"और भय के कारण – और आनेवाली घटनाओं को देखते-देखते लोगों के जी में जी न रहेगा।"

अब हम इस तीसरे परिछेद में दिए गये अन्तिम दिनों को बाइबल में से देखें (मत्ती २४:३-८) "और जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा तो चेलों ने अलग उसके पास जाकर कहा कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा? यीशू ने उनको उत्तर दिया, सावधान रहो। कोई तुम्हे न भरमाए। क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे कि मैं मसीह हूँ। और बहुतों को भरमाएंगे। तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जान क्योंकि इनका होना आवश्यक हे परन्तु उस समय अन्त न होगा। क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा और जगह-जगह आकाल पड़ेंगे और भुंईडोल होंगे। ये सब बाते पीड़ाओं का आरम्भ होंगी। इस प्रकार ये चिन्ह दिखाये गये हैं –

(८) बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे कि मैं मसीह हूँ और बहुतों को भरमाएंगे।

(९) तुम ल्ड़ाइयों पर लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे।

(१०) आकाल पड़ेंगे और भुंईडोल होंगे।

(११) कई झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों को भरमाएंगे। (मत्ती २४:११)

(१२) और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जायेगा। (मत्ती २४:१२)

(१३) और राज्य का यह सुसमाचार जगत में प्रचार किया जाएगा कि सब जातियों पर गवाही हो। (मत्ती २४:२४)

इनमें से कुछ चिन्ह बड़ी अद्भुत रीति से पूरे हो गये हैं और कुछ पूरे होने वाले है। क्या यह महत्वपूर्ण बात नहीं है कि संसार के अन्त के विषय में इतनी भविष्यवाणियाँ की गई। क्या यह अजीब बात नहीं कि एक एक करके सब भविष्यवाणियाँ पूरी हो रहीं हैं? इसलिए हम आपको सप्रेम नेवता देते हैं कि पवित्रशास्त्र पर विश्वास लायें और प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता स्वीकार करें। यीशु ने कहा – "देखों मैं शिघ्र आता हूँ।" कितनी प्रसन्नता होगी उनको जो प्रभु के पुनर्रागमन से प्रेम करते हैं।

इसके विपरीत उन पापियों के लिए जिन्होंने पश्चाताप् नहीं किया है; प्रभु का दोबारा आना भय से काँपने, रोने और दाँत पीसने का कारण होगा (प्रकाशित: १:६) "और देखो वह बादलों के साथ आने वाला है और हरएक आँख उसे देखेगी, वरण जिन्होंने उसे बेघा थ, वे भी उसे देखेंगे और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ। आमीन। जब तुम बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ प्रभु यीशु मसीह को बादलों पर आकाश से आते देखेंगे; तब पश्चाताप् करने में बहुत देरी हो चुकी होगी। अभी अनुग्रह के दिन हैं, अभी पश्चाताप् का समय है। जिन्होंने पाप से पश्चाताप् करने से इन्कार किया और पापों में लिप्त रहे वे प्रभु यीशु मसीह के दोबारा आने पर भागकर छिपने का व्यर्थ प्रयत्न करेंगे, उनकी महिमामय, प्रकाशवान उपस्थिति से भागना चाहेंगे।

काश पवित्र आत्मा आपकी सहायता करे कि आप प्रभु यीशु के दूसरे आगमन के लिए तैय्यार रहें।

# अध्याय १३
# बादलों पर उठाया जान

एक दिन आयेगा जब संसार के हर भागों से बहुत से लोग, नर-नारी और बच्चे रहस्यमय रुप से अचानक लोप हो जायेंगे।

जब जगत का अनत आयेगा तब इस संसार के दुष्ट लोगों पर परमेश्वर का क्रोध उंडेला जायेगा। जो लोग आनन्द और आशा से प्रभु यीशु के वापस आने की बाट जाहे रहे हैं अर्थात् जो अपनी धार्मिकता और आत्मिकताके कारण संसार के सर्वोत्तम लोग है, वे उठा लिए जायेंगे। कितु जिन्होंने अपने पापों से पश्चाताप् नहीं किया है, और परमेश्वर की चेतावनियों पर विश्वास नहीं किया है वे अति संकटमय समय में होंगे। क्या आप परमेश्वर के चुने हुए लोगों में होना चाहते हैं? यदि हाँ तो कुछ भी विलम्ब किए बिना अपने पापों से पश्चाताप् करें और प्रभु यीशु के पुनर्रागमन के लिए तैय्यार हो जायें।

जब ये धार्मिक लोग उठा लिए जायेंगे तब संसार में बहुत गड़बड़ी मचेगी। समाचार पत्रों मे इनके विषय में छापां जायेगा और हर कोई इनकी चर्चा करेगा। कई घरों में द्वार खुले होंगे, चूल्हा भी जलता होगा, नल का पानी बह रहा होगा; पर घर में कोई नहीं होगा। वे सब जो प्रभु यीशु के लिए तैय्यार थे ले लिए गये होंगे। कई घरों में से लोगों के देखते-देखते कुछ लोग उठा लिए जायेंगे। सब जगह भारी दु:ख और आश्चर्य फैल जायेगा। फैकूरियों, ऑफिसों, अस्पतालों, स्कूलों और कॉलेजों में से, अर्थात् हर स्थन से लोग रहस्यमय ढंग से गायब हो जायेंगे। नि:सन्देह जो बचे रहेंगे इस संसार में वे बड़े अचम्भित होंगे। शायद इधर-उधर कुछ लोग बातें करते रहेंगे कि हमने पवित्र बाइबल में पढ़ा था कि

संसार के अन्त में ये सब बातें होंगी। ऐसी स्थिति अधिक समय तक नहीं रहेगी। कई दिनों या महिनों तक ऐसा नहीं होगा पर यह सब पलक झपकते ही हो जायेगा।

संसार के अनजाने में प्रभु यीशु आकर अपने लोगों को ले जायेंगे। वे पृथ्वी पर नहीं उतरेंगे कि संसार उनको देख सके। उनके आने पर पिछले हजारों वर्षों तक जिन सब लोगोंने अनुग्रह के कारण उद्धार का इनाम पा लिया होगा वे अविनाशी और रुपवान शरीर के रुप में उठा लिए जायेंगे। अनगिनित लोगों का झुन्ड एक साथ अपने प्रभु यीशु से मिलने को हवा में ऊपर उड़ जायेगा। शायद कुछ लोग इनको ऊपर जाते तब तक देखेंगे जब तक वे बादलों में छिप नहीं जाते। ऊपर उठाये गये ये लोग यीशु के साथ स्वर्ग पर जायेंगे और सदाकाल तक उनके साथ रहेंगे। ऐसे लोगों को जो अपार प्रसन्नताा होगी, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

ऊपर  उठाये गये लोगों के साथ एक अजीब बात यह होगी कि उनके वे वस्त्र उसी समय, उसी जगह बदल जायेंगे। उनके चश्मे और नकली दाँत भी एकदम गिर जायेंगे क्योंकि उनका नाशवान शरीर लोप हो जायेगा।

बाइबल में इसे 'रैप्चर' या 'उठा लिए जाना' कहा गया है।

(१ थिस्सुलु ४:१६-१७) "क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय लहनकर और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रिति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

(मत्ती २४:३९-४३) "और जब तक जल-प्रलय आकर उनको बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। सो उस

समय दो जन खेत में होंगे और एक ले लिया जायगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा। दो स्त्रियाँ चक्की पिसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जायेगी। इसलिए जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आयेगा। परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आयेगा, तो जागता रहता और अपने घर में सेंघ लगने न देता।"

(१ कुरिन्थयों १५:५९-५२) "देखो, मैं तुमसे भेद की बात कहता हूँ, कि हम सब तो नहीं सोएंगे परन्तु सब बदल जायेंगे। और क्षणभर में पलक मारते ही, पिछली तुरही फूंकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे।

(१ कुरिन्थ १५:४०-४४) स्वर्गीय देह हैं और पार्थिव देह भी हैं; परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और है और पृथ्वी का और। सूर्य का तेज और है और चाँद का और है और तारागणों का तेज और है। क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है। मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। शरीर नाशमान दशा में बोया जाता है और अविनाशी रुप में जी उठता है। वह अनादर के साथ बोया जाता है और तेज के साथ जी उठता है। निर्बलता के साथ बोया जाता है और सामर्थ के साथ जी उठता है। स्वाभाविक देह बोई जाती है और आत्मिक देह जी उठती है। जबकि स्वाभाविक देह है तो आत्मिक देह जी उठती है। जबकि स्वाभाविक देह है तो आत्मिक देह भी है।"

(१ कुरिन्थियों १५:२२-२३) "और जैसे आदम में सब मरते हैं: वैसे ही मसीह में सब जिलाए जायेंगे। परन्तु हर एक अपनी-अपनी बारी से; पहला फल मसीह, फिर उसके आने पर उस के लोग।"

प्रिय मित्रों क्या आप पूर्णत: पवित्र, निष्कलंक परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करते हैं? उन्होंने हमसे इतना अधिक प्रेम किया कि वे इस जग में आये और हमारे पापों के कारण क्रूस पर मारे गये। वे हमें अपने पवित्र बच्चे बनाना चाहते हैं ताकि हम सदा उनकी पवित्र उपस्थिति में रहें। उन्होंने कहा – (यूहन्ना १४:२-३) “मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैय्यार करने जाता हूं। यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैय्यार करुं, तो फिर आकर तुम्हें, अपने यहाँ ले जाऊंगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।” क्या आप नम्रता से प्रार्थना न करना चाहेंगे “प्रभु यीशु मेरी सहायता कीजिए कि आपके वापस आने पर मैं, मिलने को तैय्यार रहूँ।”

## अध्याय १४
## खीष्ट विरोधी

हमने जान लिया है कि प्रभु यीशु चुपचाप आ जायेंगे कि अपने चुने हुए लोगों से हवा के बीच में मिलें और उन्हें अपने संग ले जाकर सदा काल तक रखें। संसार के लोगों की तुलना में इन लोगों की संख्या छोटी हैं जो संग ले जाये जायेंगे। इनके जाने के बाद भी संसार का काम-काज चलता रहेगा। लगभग जैसे साधारण तौर पर होता है। उठाये गये लोगों की अनुपस्थिति बुरी लगेगी और उनकी याद आयेगी।

कुछ ही समय बाद एक खास मनुष्य इस संसार में दिखाई देगा। कुछ उसकी प्रशंसा करके कहेंगे कि यह तो यीशु जैसा सामर्थी है जब कि वास्तव ये यह प्रभु यीशु से बिलकुल भिन्न होगा; जिन्होंने हमसे इतना प्रेम किया कि हमारे कारण क्रूस की मृत्यु भी सह ली। यह दूसरा मानव यीशु विरोधी होगा। पवित्रशास्त्र ने इसे कई नाम दिये हैं – खीष्ट विरोधी (१ यूहन्ना २:१८) ‘पापी मानव’ (२ थिस्लुनी २:३) “छोटे सींग” (दानिएल ७:८)

आनेवाला राजकुमार (दानिएल ९:२६) मनमानी करनेवाला राजा (दानिएल ११:३६) पशु (प्रकाशित १३:९) इस अध्याय में हम इसे खीष्ट –विरोधी या पशु कह कर सम्बोधित करेंगे।

यह खीष्ट-विरोधी इस जगत के लोगों की प्रशंसा और सम्मान को प्राप्त करेगा। वह कलाओं को बढ़ायेगा और देशों में शान्ती लाने का वायदा करेगा। (दानिएल ८:२४-२५) वह उत्तर और दक्षिण के राजाओं से युद्ध करेगा। वह संसार का महाराजा या स्वामी हो जायेगा, निर्देशक बन जायेगा। पवित्रशास्त्र में इसका वर्णन हैं – "और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चले। और उन्होंने उस अजगर की पूजा की; कि इस पशु के समान कौन है? और उसे यह अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पायें; और उसे हरएक कुल, और लोग और भाषा और जाति पर अधिकार दिया गया: और पृथ्वी के वे सब रहनेवाले जिनके नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे। (प्रकाशित: १३:३, ४, ७, ८) वह केवल सर्वोच्च शासकी ही नहीं पर इस संसार के परमेश्वर सा होगा।

हम पहले ही बता चुके हैं कि 'आनेवाला यह राजकुमार', जो खीष्ट विरोधी है; एक सप्ताह अर्थात् ६ वर्षों के लिए यहूदियों के साथ वायदा करेगा। (दानिएल ९:२६,२७) पर सप्ताह के बीच में ही अपनी वाचा को तोड़ देगा। यहूदियों से अपना सम्बन्ध तोड़ने के बाद वह जगत का प्रधान बन जायेगा और शेष साढ़े तीन वर्षों तक राज्य करेगा। जैसा कि हम पढ़ते हैं (प्रेरितों १३:५) में लिखा है - 'और उसे बयालीस महने तक कम करने का अधिकार दिया गया।' वह परमेश्वर की निन्दा करने को मुँह खोलेगे (प्रकाश १३:६) वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आपको परमेश्वर प्रगट करेगा

(२ थस्सलु २:४) वह बड़े-बड़े चिन्ह दिखायेगा यहाँ तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देगा। और उन चिन्हों के कारण पृथ्वी के रहनेवालों को भरमायेगा और अपनी मूरत बनवाकर उसकी पूजा करने को लोगों को विवश करेगा। (प्रकाशित १३:१३-१५)

हम जब संसार की वर्तमान दशा देखते हैं, और घटनाएँ सुनते हैं तो हम जान गये हैं कि खीष्ट विरोधी के आने की तैय्यारी हो चुकी है। अब लोग परमेश्वर को नहीं चाहते। कुछ लोग किसी भी धर्म को मानने से उकता गये हैं। वे सोचते हैं कि हर धर्म खोखला है। इस जगत में कोई धर्म सच्चा नहीं है। कई देशों के लोग कहते हैं "ईश्वर मर गया है।" और कई देशवासी कहते हैं, "ईश्वर है ही नहीं।" यह दशा बड़ी दु:खदायी है क्योंकि इससे खीष्ट-विरोधी के आगमन का रास्ता तैय्यार होता है।

पवित्र और स्वर्गीय बातें इस जगत के लिए असत्य लगती हैं। हर जगह लोग केवल सांसारिक धन, शारीरिक स्वास्थ, सांसारिक सुख और राजकीय शान्ति के पींछे पड़े हैं। खीष्ट-विरोधी यह सब उनको देगा। इन बातों को पूरा करने के लिए वह बड़े-बड़े चिन्ह दिखाएगा और संसार उसके पीछे चलेगा। (प्रकाश १३:१३-१४)

आप कल्पना कर सकते हैं कि ऐसे नियम कैसी बड़ी यातनाएँ लायेंगे। उन पर जो यीशु के अनुयायी हैं। यदि वे इस चिन्ह, नियम को मान लेते तो वे खीष्ट-विरोधी से जुड़ जाते हैं जो ईश्वर का शत्रु है। यदि वे इन्कार करते हैं तो वे भूखे मरेंगे क्योंकि वे अनाज और जीवन की दूसरी आवश्यक वस्तुएँ नहीं खरीद पायेंगे।

हम मसीहियों को इन दिनों में डरकर रहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि बाइबल से हम इस बात को समझते हैं कि जोअपनी कमर कसकर; अपनी जलती मशालें

लेकर तैय्यार रहेंगे वे प्रभु यीशु के दोबारा आने पर उड़कर उनसे हवा में जा मिलेंगे। आने वाली ताड़नाओं के भयानक दिनों से बचकर वे सदा स्वर्ग में उनके साथ निवास करेंगे।

अब तक ख्रीष्ट-विरोधी उत्पनन नहीं हुआ है पर परमेश्वर का वचन बताता है कि इस समय भी जग में कई ख्रीष्ट-विरोधी हैं। (१ यूहन्ना २:१८) वर्तमानकाल, जिसमें हम रहते हैं, इसमें ख्रीष्ट-विरोधी दिनों की कई समनताएँ हैं। ऐसी शक्तियाँ इस जग में काम कर रहीं है जो हमें अनुचित काम करने को विवश करतीं हैं। यदि हम उनका विरोध करें तो वे नुकसान से हमें डरातीं हैं, सताव और मृत्यु का भी भय दिखाती हैं। जैसे व्यापारी और अन्य लोग कहते हैं कि झूठ बोले बिना वे सफलता पूर्वक अपना व्यवसाय नहीं चला सकते, और वे ख्रीष्ट – विरोधी की आत्मा के सामने समर्पण कर देते हैं। वे अपने जीवन में उसका चिन्ह और गवाही लेते हैं जो 'पशु के चिन्ह से मिलता है'। कुछ कहते हैं कि घूस दिये बिना वे नौकरी या पदोन्नति नहीं पा सकते। इस प्रकार घूस देकर वे इस चिन्ह को प्राप्त कर लेते है। कई विद्यार्थी कहते हैं कि परीक्षा में उनके सभी साथी चोरी करते हैं और यदि वे भी ऐसा ही ना रकें तो उत्तम अंक नहीं पा सकते, अत: वे भी बेइमानी करते हैं और 'पशु का चिन्ह पाते हैं।' कई लोग अधिक दबाव-पड़ने पर अन्त में झुक जाते हैं और कुछ जरा सी विपरीत स्थिति होने पर ही समर्पण कर देते हैं। पर धन्य हैं वे लोग जो शदरक मेशक और अबेदनगो के समान ईमानदार हैं जिन्होंने मृत्यु के भय के सामने भी सोने की मूर्ति के सामने झुकने से इन्कार कर दिया। (दानिएल ३:१६-१९)

प्रिय मित्रों क्या आपने कोई चिन्ह अपने जीवन में, अपनी गवाही में लिया है; जो यह दर्शाता है कि आप अपने उद्धारकर्ता के प्रति ईमानदार नहीं है? क्या उस घृणित चिन्ह को अपने ऊपर ले लिया है जो 'पशु के चिन्ह समान है? यदि हाँ तो आपने जीवित और सच्चे परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है जिसने आपकी रचना की है। जो मनुष्य बना ताकि

आपके पापों के लिए बलिदान हो, जो आपको अनन्त काल से प्रेम करता है और आपके लिए एक महिमामय उद्धार की तैय्यारी की है। अत: अब आप दण्ड के योग्य हैं जो अनन्तकाल तक चलता रहेगा। आप इसी योग्य हैं कि परमेश्वर का भयानक क्रोध आप पर उण्डेला जाय।

## अध्याय १५
## भारी क्लेश

हमने देखा कि ख्रीष्ट-विरोधी संसार के अन्तिम दिनों में कैसे प्रगट होगा। यह समय अब बहुत नजदीक है। आइये देखें कि उसके प्रगट होने के सात वर्षों के विषय में बाइबल क्या कहती है।

यह तो बताया ही जा चुका है कि ख्रीष्ट-विरोधी जब आयेगा तो यहूदियों से 'सात सप्ताहं' अर्थात् सात वर्ष के लिए वाचा बांधेगा (यहूदी उसें मसीहा के रुप में ग्रहण करेंगे जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने पुराने-नियम में कई वर्षों पहले भविष्यवाणी की थी। पहले ख्रीष्ट-विरोधी अपने को यहूदी बताते की कोशिश करेगा; क्योंकि यहूदी लोग किसी गैर-यहूदी को अपना मसीहा कभी स्वीकार नहीं करेंगे। दो हजार वर्ष पूर्व उनके बाप-दादों ने प्रभु यीशु मसीह को अपना मसीहा स्वीकार नहीं किया इसलिए प्रभु को क्रूस पर लटकाया। यह एक दुखद और अजीब बात है कि जब ख्रीष्ट-विरोधी दुष्ट आयेगा तब यहूदी उसे मसीहा के रुप में ग्रहण करेंगे और आनन्दित होकर कहेंगे कि आह, भविष्यवाणियाँ अन्त में पूरी हो ही गईं। (यूहन्ना ३:१९) "और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जान क्योंकि उनके काम बुरे थे।"

ख्रीष्ट-विरोधी जिन सात वर्षों में प्रगट होगा उन्हें 'महा क्लेश' का समय कहा गया है। ऐसा कहने के दो कारण हैं – पहला क्योंकि ख्रीष्ट-विरोधी बड़ा क्रूर सताव करेगा और दूसरा – इन दिनों में परमेश्वर जगत पर भयानक न्याय क्षमता, या कयामत भेजेंगे। शैतान इन दिनों में लोगों के हृदयों को और कठोर कर देगा। और परमेश्वर की निन्दा करने के लिए उनका प्रयोग करेगा। परन्तु परमेश्वर इन्हीं दिनों के कष्टों का प्रयोग करके अपने लोगों को पवित्र और सामर्थी बनायेंगे।

प्रकाशित वाक्य की पुस्तक में संकटकाल की घटनाओं का वर्णन है। प्रकाशित वाक्य के ६ से १९ में यह लिखा है। अध्याय ६ का आरम्भ ख्रीष्ट-विरोधी के आगमन के वर्णन से होता है (प्रकाश ६:२) और मैने दृष्टि की और देखो एक श्वेत घोड़ा है और उसका सवार धनुष लिए हुए है, और उसे एक मुकुट दिया गया; और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय करे।"

ख्रीष्ट-विरोधी के आते ही शान्ती जगत स`ले ली जायेगी और कई को वध किया जायेगा।

तब आकाल आयेगी और भयानक विपत्तियाँ आ पड़ेंगी (पद ५-८)

इन सबके बीच एक सुन्दर बात यह होगी कि वे लोग जो किन्ही कारणों से प्रभु को मिलने को तैय्यार नहीं थे और उठाये लिए जाने के समय छूट गये थे; अब सच्चे और जीवित परमेश्वर की ओर फिरेंगे और हर स्थिति में उनके प्रति ईमानदार बने रहेगे। बाइबल जो कि परमेश्वर का पवित्र वचन कहलाता है उसके प्रति ईमानदार रहने के कारण ये लोग वध किये जायेंगे (प्रकाश ६:९-११) और जब उसने पाँची मुहर खोली; तो मैने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा, जो परमेश्वर के वचन के कारण और उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी थी, वधकिए गए थे। और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार कर

कहा; हे स्वामी, हे पवित्र और सत्य, तू कबतक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लडाई का पलटा कब तक न लेगा? और उन में से हर एक को श्वेत वस्त्र दिया गया और उन से कहा गया कि और थोड़ी देर तक विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दास और भाई, जो तुम्हारी नाई वध होने वाले हैं; उन की भी गिनती पूरी न हो ले। फल स्वरुप उन दिनों में साहसी और परमेश्वर के पवित्र जन अल्पकाल तक ही जियेंगें क्योंकि ख्रीष्ट-विरोधी उन्हें ढूंढकर शीघ्र मार डालेगा।

हम सोचते हैं कि ख्रीष्ट-विरोधी द्वारा भयानक सताव के इन दिनों में यह सम्भव नहीं होगा कि विश्वासी लोग कलीसिया के रुप में एकत्र हो सकें और पवित्रता के साथ प्रभु की आराधना कर सकें, और महिमामय वचन का प्रचार कर सकें। इन सबका होना संभव था पर वह समय उठाये जाने के समय समाप्त हो जायेगा; जेसा कि वर्णन अभी किया है। आजकल शैतान के हाथ के परमेश्वर रोके है, कलीसिया जो कुछ इस संसार में बांधेगी वह स्वर्ग पर भी बांधा जायेगा। महिमा से पूर्ण और जयवन्त इन दिनों में हम जो जीवित हैं; कितने अशीषित और भाग्यवान हैं। पर महाविपत्ति और क्लेश के दिनों मे शैतान को रोकनेवाला यह हाथ उठ जायेगा और शैतान बुरे से बुरे काम कर सकेगा। (२ थिरसलु २:६-८) और अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है कि अपने ही समय में प्रगट हो। क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर न हो जाय, वह रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु मसीह मुँह की फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म कर देगा। (२ थिरसु २:६-८) “यह भी सेनाओं के यहोवा की ओर से नियुक्त हुआ है; वह अद्भुत युक्तिवाला और महाबुद्धिमान है।” (यशा २८:२९)

इन क्लेश के दिनों में ईमानदार विश्वासियों की गिनती वह होगी – १४४,००० इस्राएली, और हर एक जात और कुल के लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़ जिसे कोई नहीं गिन सकता था।" (प्रकाश ६:४-९) जब हम इन विश्वासी ईमानदार नर और नारियों के विषय में सोचते हैं तो हमारे हृदय कितने उत्साह और प्रेरणा से भर जाते हैं। यदि आपको क्लेष के इन दिनों से गुजरना पड़े तो क्या आप ईमानदार बने रहेंगे? यदि आप अधिकांशतः शान्ति के दिनों में ईमानदार नहीं रहे तो सताव के दिनों में कैसे ईमानदार बने रहेंगे? (यशा. १२:५) – "तू जो प्यादों व्ही के संग दौड़कर थक गया है, तो घोड़ो के संग क्योंकर बराबरी कर सकेगा? और यद्यपि तू शान्ति के इस देश मे निडर है परन्तु यरदन के आसपास के जंगल में तू क्या करेगा।"

इन सबमें हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने सिंहासन पर है और सबकुछ उनके नियंत्रण में है। जैसे-जैसे संसार के अन्तिम दिन समीप आयेंगे, शैतान का काम और तेजी से बढ़ेगा; क्योंकि वह जानता है कि उसका अन्त भी नजदीक आ रहा है। पर इन भयानक घटनाओं के बीच में भी परमेश्वर ने एक अति महान योजना बनाई है, वे महिमामय अपनी इस उपयोगी योजना की ओर बढ़ते जा रहे है।

जों लोग प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करते हैं उन्हें हर प्रकार के सताव को सहने के लिए तैय्यार रहना चाहिए। कृपया पढें - मत्ती १०:२६-२९ जो मसीह के कारण दु:ख उठायेंगे उन्हें उत्तम इनाम दिया जायेगा। वे सिंहासन पर विराजेंगे। यदि हम क्लेष सहेंगे तो प्रभु के साथ राज्य भी करेंगे।(२ तिमुथी २:१२)

क्या हम ख्रीष्ट के कारण दु:ख मुसीबतों को सहने को तैय्यार हैं यदि हाँ तो हम अनन्तकाल तक राज्य करेंगे।

## अध्याय १६
## महिमा के साथ ख्रीष्ट का पुन:आगमन

सात वर्षों के भयानक क्लेषों के बाद प्रभु यीशु मसीह बड़ी महिमा और सामर्थ के साथ इस जग में आयेंगे। "और मै ने स्वर्ग का खुला हुआ देखा; और उस पर एक सवार है; जो विश्वास योग्य और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है। और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे हैं। और उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु। फिर मैने उस पशु और पृथ्वी के राजाओं और उनकी सेनाओं को उस घोड़े के सवार और उसकी सेना स लड़ने के लिए इकट्ठे देखा। और वह पशु और उसके साथ वह झूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया, ... ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गन्धक से जलती है, डाले गए।" इस प्रकार उस अधर्मो और उसके सहायक झूठे भविष्द्वक्ताओं के राज्य का अन्त होगा।

इस महायुद्ध में प्रभु यीशु मसीह अकेले नहीं लड़ेंगे; किन्तु उनके अनुयायियों की सेनाएँ सहायतां करेंगी। परमेश्वर सर्व शक्तिमान है, वे शैतान का न्याय करके संसार के आरम्भ के समय से कभी भी उसे दण्ड़ित कर सकते थे। किन्तु ऐसा करने की उनकी इच्छा नहीं थी। वे शैतान और उसके गिराये गये दूतों का जो आपके और मेरे समान उसके बच्चे है; सबका न्याय करना चाहते थे। इस सन्तान को प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने अपने बहुमूल्य खून के द्वारा छुटकारा दिया है। यह खून कलवरी के क्रूस पर बहा है। (रोमियों १६:२०) शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पावों से शीघ्र कुचलवा देगा।" "क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे (कुरीन्थ ६:२-३) परमेश्वर की इच्छा है इस महान उद्देश्य में आप भी शामिल हों। क्या आज ही आप नम्रतापूर्वक अपने जीवन को प्रभु

यीशु को समर्पित करना ना चाहेंगे कि आप भी उन लोगों में हों जो श्वेत और साफ, मलमल के वस्त्र पहने हों और श्वेत घोड़े पर सवार हों। और जिन्हें सौभाग्य और सम्मान होगा कि इस महायुद्ध में भाग लें और प्रभु यीशु के पीछे चल कर विजय पर विजय प्राप्त करें?

ख्रीष्ट-विरोधी के जब सात वर्ष पूरे होंगे तब तब प्रभु यीशु स्वर्ग से नीचे आयेंगे, वे अपने दूतों को अपने संग लायेंगे, "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के संग आया कि सबका न्याय करे।" (यहूदा १४, १५) ये सन्त कौन हैं? अनुयायी पौलुस ने रोम के विश्वासीयों को लिखा है – "उन सबके नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं, और पवित्र होने के लिए खुलाए गये हैं।" (रोमियों १:६) रोम के सब विश्वासियों को पौलुस 'सन्त' कहता है। ये सन्त जो प्रभु यीशु के साथ आयेंगे, वे विश्वासी लोग है जो प्रभु में सो चुके हैं तथा वे भी हैं जो अभी जीवित है और प्रभु के साथ हवा में उठा लिए जायेंगे जिसका हम वर्णन कर चुके हैं। प्रभु आपको बुला रहे हैं कि इन सन्तों में शामिल होने का आपको सौभाग्य मिले।

प्रभु यीशु के दूसरे महिमामय, स्वर्ग से पृथ्वी पर आगमन पर ये, सन्त भी साथ आयेंगे। ये शरीर-रहित आत्माओं या भूतों के रुप में नहीं होंगे। उनका शरीर देखा, पहचाना और छुआ जा सकेगा। उनकी देह वैसी ही होगी जैसे मरकर जी उठने के बाद प्रभु यीशु मसीह की ज्योतिमान देह थी। "वे ये बातें कह ही रहे थे कि वह आप हीउनके बीच में आ खड़ा हुआ; और उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले। परन्तु वे घबरा गए, और डर गए और समझे कि हम किसी भूत को देखते हैं। उसने उनसे कहा; क्यों घबराते हो? और तुम्हारे मन में सन्देह क्यों उठते हैं? मेरे हाथ और मेरे पांवों को देखो कि मैं वही हूँ; मुझे छुकर देखों, क्यों कि आत्मा के हड्डी और मांस नहीं होता जैसा मुझमें देखते हो। यह कहकर उसने उन्हे अपने हाथ पाँव दिखाये। जब आनन्द के मारे उनको प्रतीति न हुई और आश्चर्य

करते थे, तो उसने उनसे पूछा, क्या यहाँ तुम्हारे पास कुछ भोजन हैं? उन्होंने उसे भूनी मच्छली का टूकडा दिया। उसने लेकर उनके सामने खाया। (लूका २४:३६“४३)

यीशू के साथ परमेश्वर के सामर्थी दूत भी आयेंगे। “और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे, उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।”(२ थिरसलु १:७-८)

प्रभु यीशु का दूसरा आगमन बड़ी महिमा के साथ होगा। “और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।”(मत्ती २४:३०) “यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा क्योंकि तुमने हमारी गवाही की प्रतीति की” (२ थिस्सलु १:१०)

इसके विपरीत यीशु का दोबारा आगमन उन लोगों के लिए अचरज और भय का कारण होगा जिन्होंने अपने पापों से पश्चाताप् नहीं किया है। इनमें से किसी को भी छोड़ा नहीं जायेगा। “क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।” (रोमियों १:२०) बाइबल जो कि परमेश्वर का वचन है, हमें बड़ी सच्चाई से चेतावनी देती है, “मैं तुमसे कहता हूँ की नहीं? कि यदि तुम मन न फिराओगे, तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।” (लूक १३:३) इसलिए परमेश्वर .. सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।” (प्रेरितो १७:३०)

यीशू का दोबारा आना उन लोगों के लिए बड़े भय का कारण होगा जो परमेश्वर के एकलौते पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते हैं। कितने पवित्र हैं वो, कितने सुन्दर हैं,

उनका प्रेम कितना बड़ा है जिसके कारण प्रभु ने हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी। वे पुन: जी उठने और सामर्थी होने के कारण कितने महिमामय हैं। क्या धरती पर ऐसा कोई मनुष्य है या स्वर्ग में कोई दूत है जो मसीह से अधिक विश्वास और प्रेम करने योग्य हैं?

प्रभु यीशु जब अपने हजारो सन्तों और विशाल स्वर्गदूतों के साथ, पूरे वैभव और महिमा के साथ स्वर्ग से उतरेंगे तो जिन्होंने पापों से पश्चाताप् नहीं किया है और प्रभु पर विश्वास नहीं किया है वे दौड़कर छिप जायेंगे। (प्रेरित ६:१५-१७) "और पृथ्वी के राजा, और प्रधान और सरदार और धनवास और सामर्थ लोग और हर एक दास और हर एक स्वतंत्र पहाड़ों की खोटों में और चट्टानों में जो छिपे। और पहाड़ो और चट्टानों से कहने लगे कि हम पर गिर पड़ो और हमें उसके मुँह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो।"

जब हवाई - आक्रमण का सायरन बजता है तब आश्रय के लिए लोगों को इधर-उधर भागते क्या आपने देखा है? शायद उन्हें सुरक्षा मिल जाये पर प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक भी जिन लोगों ने उन पर विश्वास नहीं किया है, अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया है, उनके लिए बचने की कोई आशा नहीं है।

पवित्र बाइबल से जो कि परमेश्वर का वचनच है इन सब बातों को पढ़कर और परमेश्वर की चेतावनियों को पाकर भी; हे प्रिय पाठकों यदि आप उन लोगों में हैं जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है तो यह कितना दु:खदायी और भयानक होगा! हम आपसे गिड़ गिड़ाकर प्रार्थना करते हैं कि आज ही आप अपने पापों से पश्चाताप् करें और प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण करें।

## अध्याय १७
## ख्रीष्ट का पुनःआगमन (क्रमशः)

जब यीशु महिमा में अपने संतों के साथ आयेंगे तो वे इस पृथ्वी पर एक हजार वर्षों तक राज्य करेंगे। उनके आने तक या आने पर ये घटनाएँ घटेंगी –

१) बाबुल और घृणित वस्त्रुओं की माता पर दण्ड की आज्ञा। (प्रकाशः १६ अध्याय)

२) बाबुल के महानगर पर दण्ड की आज्ञा होना। (प्रकाशितः १८ अध्याय)

३) मेम्ने की दुल्हन का तैय्यार होना। (प्रकाशितः १९)

४) अधर्मी, ख्रीष्ट-विरोधी और झूठे भविष्यवक्ताओं को अग्नि की झील में डाला जायेगा। (प्रकाशः १९)

५) शैतान एक हजार वर्षों तक बान्ध दिया जायेगा (प्रकाशित वाक्य २०)

६) ख्रीष्ट के चुने हुए सिंहासन पर बैठेंगे। (प्रकाशित २०)

७) वे ख्रीष्ट के साथ इस जगत पर एक हजार वर्षों तक राज्य करेंगे। (प्रकाशितः २०)

पवित्रशास्त्र की भविष्यवाणियाँ हमें आगामी घटनाओं के विषय में सूचना देती हैं। मे हमें उत्साहित करती हैं कि हम प्रभु पर विश्वास करें और उनकी आज्ञा मानें। वे हमारा मार्ग-दर्शन करके बताती हैं कि हमें किस दिशा में जाना चाहिए। ये हमें सिखाती हैं कि हम उनके महान अनन्त उद्देश्य से संबन्धित उचित सेवा कैसे करें।

१) बाबुल पृथ्वी की वेश्या और घृणित वस्तुओं की इस जगत की माता लाचार और नंगी कर दी जायेगी और उसे आग में जला देंगे। (प्रकाशित १७:५, १६) पहले यह बाबुल लोगों और भीड़, देशों और भाषाओं पर अधिपत्य जमाये था। (पद १५) वह पृथ्वी के रहनेवालों और राजाओं पर भी व्यभिचार लाई। इसके अतिरिक्त वह पवित्र लोगों के लहु और यीशु के गवाहों के लहू पीने से मतवाली हो गई।

इस उपयुक्त वर्णन से हम बाबुल को शायद “संसार के अनैतिक सम्बन्धों से जान सकते हैं; जो परमेश्वर की आराधना और आदर करने का दावा करते हैं, जो इस सृष्टि के रचनेवाले हैं, पर व्यभिचारता का जीवन बिताते, और जो जीवित और सच्चे परमेश्वर से सच्चा प्रेम करते हैं, उन्हें सताते और मार डालते हैं।

धर्मी कहे जानेवाले लोगों, पुजारियों ने धर्म के नाम पर छुपकर या खुलेआम जो क्रूरतापूर्ण हत्याएँ, व्यभिचार कुकर्म और घृणित कार्य किये हैं उनका यहाँ वर्णन करने का समय नहीं है। न्याय का दिन उन सबके लिए शीघ्र आनेवाला है। प्रिय पाठकों क्या आप भी ऐसी संगत में हैं? यदि हाँ तो परमेश्वर के इस वचन पर ध्यान करें – “फिर मैंने स्वर्ग से, किसी और का शब्द सुना कि हे मेरे लोगों उस में से निकल आओ, कि तुम उसके पापों में भागी न हों और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पडे। (प्रकाशित १८:४) क्या आप बाबुल की गड़बड़ियाँ छोड़कर उद्धारकर्ता ख्रीष्ट के पास नहीं आयेंगे?

२) यीशु के आगमन पर बाबुल का बड़ा शहर गिरा दिया जायेगा। “फिर एक बलवन्त स्वर्गदूत ने बड़ी चक्की के पाट के समान एक पत्थर उठाया और यह कहकर समुद्र में फेक दिया, कि बडा नगर बाबुल ऐसे ही बड़े बल से गिराया जाएगा और फिर कभी उसका पता न मिलेगा।” (प्रकाशित वाक्य १८:११) यह शहर व्यापार में बहुत उन्नत था (पद १२) सांसारिक वैभव से भरपूर (पद १६) व्यापारिक धन-धान्य से पूर्ण। (पद १६) हस्तकालों में सर्वोत्तम था। (पद २२) पर यहाँ सदा दुष्टात्माओं का निवास, अशुद्ध और घृणित लोगों को अड्डा था। यहाँ टोना करने और भरमानेवाले लोग भरे थे। (पद २ + २३) “और भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों और पृथ्वी पर सब घात किए हुओं का लोहू उसी में पाया गया।” (प्रकाशित १८:२४)

इस वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि यह बड़ा नगर बाबुल संसार की सबसे भ्रष्टाचारी सरकार का था। एक दिन परमेश्वर का फैसला इन सब पर आ पड़ेगा। ऐसे सब राज्य समाप्त हो जायेंगे और ख्रीष्ट तब सबके राजाधिराज होंगे।

प्रिय मित्रों, क्या आप भी ऐसीही आसपास की भ्रष्ट सरकार के बहकावे में आते हैं? क्या आप भ्रष्ट अफसरों के सामने समर्पण कर रहे हैं जो घूस के रुप में आपसे सहायता मांग ते हैं? क्या आप भ्रष्ट व्यापारियों को मदद कर रहे हैं जो झूठा हिसाब देकर आयकर से बचते हैं? क्या संसार में रहते हुए भी संसार के नहीं किन्तु यीशु के चेले हैं? (यूहन्ना १७:१५-१६)

३) मेम्ने की दुल्हन तैय्यार होगी। कलीसिया ख्रीष्ट की दुल्हन है। वह प्रभु को संतुष्ट करेगी और अनन्तकाल तक उनकी महिमा में सहभगी होगी। "..... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उनके लिए दे दिया... और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे जिसमें न कलंक, न झुर्री न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरण पवित्र और निर्दोष हो।" (इफिसियों ५:२५, २७) यह अति आनन्द का समय होगा, चारों और हल्लिलुयाह के पुकारने का। (प्रका १८:१,३, ४ और ९)

जिन लोगों ने मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा उद्धार प्राप्त कर लिया है वह इस संसार से बुला लिए जायेंगे ताकि परमेश्वर के लोग कहलायें। इन्हे 'कलीसिया' कहते हैं। जैसे एक पत्नी अपने पति को प्रसन्नता ओर सन्तोष देती है; वे भी प्रसन्नता और सन्तोष लायेंगे। पर यह सब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के कहीं अधिक बढकर होगा। जैसे एक एक राजा की पत्नी उसके राज्य की रानी बनती है; उसी प्रकार ये लोग भी मसीह के राजकीय वैभव और शक्ति के सहभागी होंगे; पर यह किसी सांसारिक राजा की रानी की

तुलना कहीं अधिक होगा। ऐसा वैभव और सामर्थ्य कोई रानी भी अपने पति राजा से प्राप्त नहीं कर सकती।

४) ख्रीष्ट-विरोधी अधर्मी और झूठे भविष्यवक्ता ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गंधक से जलती है, डाले गए। (प्रकाशितः १९:२०) हर एक वस्तु जो मसीह के विरुद्ध है, एक दिन नाश की जायेगी।

५) "फिर मैंने एक स्वर्गदूत को उतरते देखा; जिसके हाथ में अथाह कुंड की कुंजी, और एक बड़ी जंजीर थी। और उसने उस अजगर, अर्थात् पुराने सांप को, जो इबलीस और शैतान है; पकड के हजार वर्ष के लिए बान्ध दिया। ओर उसे अथाह कुण्ड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी कि वह हजार वर्ष के पूरे होने पर जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए, इसके बाद अवश्य है कि थोड़ी देर के लिए फिर खोला जाए।" (प्रकाशित २०:१-३)

६) "फिर मैंने सिंहासन देखे और उन पर लोग बैठ गये और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उनकी आत्माओं को भी देखा गया जिन के सिर यीशु गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे और जिन्होंने उस पशु की और न उसकी मूरत की पूजा की थी और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे।"(प्रकाशित वाक्य २०:४)

इस संसार में हमें अक्सर प्रभु यीशु के कारण दु:ख उठाना पड़ता है। यदि आप मसीह से प्रेम करते हैं तो आपको सताया जा सकता है। यदि आप उनके वचन का पालन करते हैं तो आपको हानि और निन्दा सहनी पड़ सकती हैं किन्तु स्मरण रखें "यदि हम दु:ख भोगते हैं तो उसके साथ राज्य भी करेंगे।" इसमें कोई सन्देह नहीं है। प्रभु यीशु ने कहा है "आकाश और पृथ्वी टल जाएं, पर मेरी बातें कभी न टलेंगी।" (मत्ती २४:३५)

६)	तब मसीह एक हजार वर्षों तक इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे। वे सन्त जो उनके साथ स्वर्गसे नीचे आये, वे भी उनके साथ राज्य करेंगे। मसीह विरोधी के भयावह काल में जिन लोगों ने इस धरती पर असंख्य कष्ट सहे हैं; वे इस धरती पर ही परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के व्यक्तिगत राज्य के दिनों में सुख और शान्ति का आनन्द लेंगे।

## अध्याय १८
## एक हजार वर्ष तक मसीह का वैभवशाली राज्य

शैतान जब बान्धकर अनन्त गड्ढे में डाल दिया जायेगा, तब प्रभु यीशु मसीह एक हजार वर्ष तक इस पृथ्वी पर राज्य करेंगे। वे अपने शारीरिक रुप में धरती पर होंगे। एक दिन था जब वे दु:खी, तुच्छ और त्यागे हुए मनुष्य थे पर अब उन्हें पूरी सृष्टि का राजा स्वीकार किया जायेगा। हर एक घुटना उसके आगे झुकेगा और हर एक जीभ स्वीकार करेगी कि वही राजा है।

इन दिनों पृथ्वी की जनसंख्या बहुत ज्यादा बढ़ जायेगी। इसमें के कुछ लोग उद्धार पायेंगे। "और देशदेशों से बचाये गये लोग उसकी ज्योति में चले फिरेंगे।" पर दु:ख की बात है कि कई छुटकारा पाने से इनकार करेंगे। इनकी संख्या समुद्र की रेत के समान होगी। (प्रकाशित वाक्य २:८) जब किसी देश का प्रधान मन्त्री अच्छा शासन करता है, और युद्ध के समय देश को भारी विजय दिलाता है; तो सब लोग इस प्रधानमंत्री की प्रशंसा करते हैं। पर अपार शान्ति, उन्नति और वैभवशाली राज्य के प्रभु यीशु मसीह के इन एक हजार वर्षों के बाद भी कुछ लोग मसीह को अब भी अस्वीकार करेंगे और कहेंगे कि हम अब उन्हें अपने ऊपर और राज्य करने नहीं देंगे। साधारण दिनों में प्रभु के लिए लोगों के

पास समय नहीं होता है। क्लेष के समय वे परमेश्वर की निन्दा करते हैं और हर बात के लिए उन्हें दोषी ठहराते हैं। बहुतायत से आशीष के दिनों में भी उनके मन परमेश्वर के प्रति कुड़कुड़ाहट और विद्रोह से भरे रहते हैं। न्याय के दिन ऐसे लोग क्या कुछ बहाना बना पायेंगे ? प्रिय पाठकों अभी भी सोचो कि क्यो तुमने अब तक पश्चाताप् करके अपने हृदय में प्रभु को ग्रहण नहीं किया है ?

प्रभु यीशु के राज्य के दिन इतने वैभवशाली होंगे कि किसी ने कभी पहले देखे ना होंगे। पवित्रशास्त्र में वर्णित कई सुन्दर भविष्यवाणियाँ पूर्णत: इस समय पूरी होंगी। "देखो एक राजा धर्म से राज्य करेगा और राजकुमार न्याय से हुकूमत करेंगे।"(यशायाह ३२:१) "यहोबा की यह वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा।" (यिर्मयाह २३:५)

भ्रष्टाचार का पूर्णत: अन्त होगा और सर्वत्र शान्ति का राज्य होगा। "वह जाति-जाति का न्याय करेगा और देश-देश के लोगों के झगड़ों को मिटायेगा; और वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे।" (यशायाह २:४)

तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा; और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा; और बछड़ा और जवान सिंह और पाला-पोसा हुआ बैल तीनों इकट्टे रहेंगे और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा। गाय और रोछनी मिलकर चरेंगी और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे और सिंह बैल की नाईं भूसा खाया करेगा। दूध पिउवा बच्चा करैत के, बिल खेलेगा और दूच छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। मेरे पवित्र पर्वत

पर न तो कोई दु:ख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि यहोवा के ज्ञान से पृथ्वी ऐसी भर जायेगी जैसा जल से समुद्र भरा रहता है।" (यशायाह ११:६-९)

प्रभु यीशु मसीह की सरकार की गद्दी पर सिय्योन और यरुशलेम होंगे। "क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन यरुशलेम से निकलेगा।" (यशायाह २:३) यह शहर अति सुन्दर होगा। सच पूछो तो यह "स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास उतरेगा।" (प्रकाशित २१:१) इसकी लम्बाई १२,००० फर्लांग या १५०० मील और चौड़ाई इतनी ही होगी। अत: आप देख सकते है कि यह एक बहुत विशाल नगर होगा। पर सबके आश्चर्य की बात तो यह है कि इसकी ऊंचाई भी इतनी हो होगी, अर्थात् १५०० मील इसलिए यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह एक चमत्कारिक नगर होगा।

संसार के हर देश के लोग इसके वैभव को देखने आयेंगे। "और जाति-जाति के लोग उसकी ज्योति में चले फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने तेज का सामान उसमें लाएंगे। और उसके फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहाँ न होगी और लोग जाति –जाति के तेज और विभव का सामान उसमें लाएंगे। और उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला या झूठ गढ़नेवाला किसी-रीति से प्रवेश न करेगा। पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखें है।" (प्रकाशित वाक्य २१:२४-२७) यहाँ आप देखेंगे कि इस शहर के द्वारा कभी बन्द ना होंगे, चाहे दिन हो, चाहे रात। इस तरह उस हर आगन्तुक का सदा स्वागत होगा यदि उन्होंने पश्चाताप् किया है और वे उद्धार पा चुके है और उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हैं। पर खेद है कि कई पश्चाताप् करने को तैय्यार न होंगे। ऐसे मनुष्य का हृदय कितना कठोर है। प्रिय पाठकों क्या आपका हृदय भी ऐसा ही कठोर है? हम आपसे विनती करते हैं कि अपने हृदय को आज ही नरम करें और छुटकारा पायें।

इस अद्भुत नगर, नये यरुशलेम में परमेश्वर के सन्तों का निवास होगा जों प्रभु यीशु ख्रीष्ट के दोबारा आगमन पर, स्वर्ग से उनके साथ आये थे। यह नगर यथार्थत: भविष्य की अनन्तता का है। शायद लोगों को इसे देखने का अवसर मिले। यह शायद उनके लिए अन्तिम अवसर हो कि वे छुटकारा पा लें। यह नया यरुशलेम, सन्तों का निवासस्थान है जो मसीह के साथ राज्य करेंगे। यहाँ राजाओं के राजा और स्वर्गिय सचिवों के शासन का स्थान होगा।

क्या परमेश्वर के सब बच्चे जो आज तक बचाये जा चुके हैं आशा करते हैं कि वे वैभवी नये यरुशलेम से मसीह के साथ राज्य करेंगें? पवित्रशास्त्र बताता है कि यह सौभाग्य केवल उन लोगों का है जो पहले जी उठनेवालों में शामिल होंगे। ईनाम स्वरुप इनमें से हरएक इस योग्य समझा जायेगा कि वे कुछ नगरों पर राज्यस करे। (मत्ती २५:२१) ये प्रथम जी उठनेवालों में होंगे। "धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है, ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी असर नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उनके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे।" (प्रकाशित वाक्य २०:६) ये वो ईमानदार विश्वासी है जो मसीह की गवाही के लिए और परमेश्वर के वचन के लिए सिर कटवाने को भी तैय्यार थे। वे लोग हैं जिन्होने ख्रीष्ट-विरोधी अधर्मी और उसकी मूरत को उपासना करने, या उसका चिन्ह अपने माथे या हाथों पर लगवाने की अपेक्षा मसीह के लिए अपना जीवन बलिदान करना अधिक उचित समझा।

प्रथम पुनरुत्थान में शामिल होने और मसीह के साथ एक हजार वर्षो तक राज्य करनेयोग्य बनने की विशेषताएँ इतनी बडीं नहीं है कि हमारे जैसे साधारण विश्वासियोंकी पहुँच के बाहर हों। अनुग्रह और विश्वास इन सुअवसरों को हर विश्वासी की पहुँच के अन्दर लाये हैं। हम योग्य नहीं है पर परमेश्वर जो सब अनुग्रह के दाता हैं, वे हम सब को

यह सुअवसर प्रदान कर रहे हैं। क्या आप विश्वास से कह सकते हैं "उसमें जो मुझे सामर्थ देता है, मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" (फिलिपियों ४:१ ३)

प्यारे पाठकों यदि परमेश्वर के अनुग्रह में आप विश्वास करते हैं, तो इसी समय घुटने टेकें और प्रार्थना करे - "हे प्रभु, मेरे जीवित उद्धारकर्ता मैं कमजोर और अयोग्य हूँ, पर आज ही मैं अपने सारे पापों और कुकर्मों के लिए क्षमा माँगता/माँगती हूँ। अपनी लापरवाही और अनाज्ञाकारिता के लिए पछताना/पछताती हूँ। मैं अपना हृदय और सम्पूर्ण जीवन आपको देता/देती हूँ। में मसीह के कारण कलेष सहने को तैय्यार हूँ। मैं उस पशु के चिन्ह को अपने माथे, हाथ या शरीर के किसी भी भाग पर नहीं लगाने दूंगा/दूंगी। आपके लिए मर जाना मुझे अधिक भला होगा क्योंकि मैं जानता/जानती हूँ कि मृत्यु के समयमें भी आप मेरे पास होंगे और मृत्यु भी मेरे लिए मिठास होगी। हे प्रभु मुझे अन्तिम समय तक मसीह के प्रति विश्वासी बनाये रखिये। आमीन।"

परमेश्वर आपको आशीष दे और प्रथम पुनरुत्थान में आपको शामिल करे।

## अध्याय १ ९
## शंसार का अन्तिम महायुद्ध

"और जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे तो वह शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी अर्थात् याजूज और माजूज को जिनकी गिनती समुद्र की बाल के बराबर होगी भरमाकर लड़ाई के लिए इकट्ठे करने को निकलेगा। और वे सारी पृथ्वी पर फैल जायेंगी और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेगी और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी। और उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यवक्ता भी होगा, डाला दिया

जाएगा। और वे दिन रात युगानुयुग अनन्त पीड़ा मे लड़पते रहेंगे।" (प्रकाशित वाक्य २०:७-११)

यह बड़ी अजीब पर सत्य बात है कि प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तिगत शासन को देखकर भी; वैभव और बुद्धिमानी से धरती पर उनका राज्य करना देखकर भी; लोग प्रभु का इन्कार कर देंगे। एकबार लोगों ने देखा था कि इस संसार के शासकों ने कैसे उनकी अस्वीकार किया था। उन्होंने देखा था कि यीशू ने रोगियों को चंगा किया, मुरदों को जिलाया, जो तुच्छ समझे जाते थे उनका भला किया। लोगों ने मसीह की नम्रता, प्रेम और पवित्रता को जान था फिर भी उनसे घृणा की, उन्हें अपमानित किया और क्रूस पर टाँगा। हजार वर्षों तक मसीह के राज्य की शान्ति और सम्पन्नता का आनन्द लेने के बाद भी; सुलेमान राजा के वैभवशाली राज्य से व संसार के किसी भी महान राज्य से काहें उत्तम यह राज्य देखकर भी, लोगों के मन शैतान के द्वारा दले जायेंगे। और वे प्रभु यीशु मसीह को तुच्छ जानेंगे, उनसे लड़ेंगे और उन पर विजय पाना चाहंगे। ऐसी स्थिति में भी धर्मशास्त्र की बातें पूरी होंगी। "जाति-जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं और देश-देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं? यहोवा और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं कि आओ हम उनके बन्धन ताड़े डालें और उनकी रस्सियों को अपने पर से उतार फेंके। वह भी जो स्वर्ग में विराजमान है हंसेगा। प्रभु उनको ठट्टों में उड़ायेगा।" (भजन १:१-४)

यीशु और परमेश्वर के विरोध में जो बड़ा और अन्तिम विरोध भड़केगा उसका संक्षिप्त वर्णन पवित्रवचन में दिया गया है। "सारे देश जो चारों दिशाओं में हैं" वे भी इसमें सम्मिलित होंगे। उनकी सेनाओं की संख्या "समुद्र की रेत के बराबर होगी।" ये सारी

सेनाएँ पवित्र नगर यरुशलेम में एकत्र होंगी। तब परमेश्वर स्वर्ग से आग को नीचे भेजेगा और वे सब नाश हो जायेंगे।

ऐसे वैभवशाली हजार वर्ष देखकर भी जैसे कि लोगों ने पहले कभी नहीं देखे थे, ये कैसे हो सकता है कि हजारों लोग मसीह के विरोध में उठ खड़े हों? इस युग में लोग बहुत स्वस्थ्य रहेंगे क्योंकि "बालक सौ वर्ष का होकर मरेगा।" (यशायाह ६५:२०) हर मनुष्य की आयु कम से कम सौ वर्ष की होगी। हर एक अपने बनाये घर मे रहेगा, किराये में रहने की कोई प्रथा नहीं होगी। "वे घर बनाकर उसमें बसेंगे। ऐसा नहीं होगा कि वे बनायें और दूसरा उसमें बसे।" (यशायाह ६५:२१-२२) प्रार्थनाओं का उत्तर तुरन्त दिया जायेगा। "उनके पुकारने से पहले ही मैं उनको उत्तर दूंगा, उनके माँगते ही मैं उनकी सुन लूंगा। (यशायाह ६५:२४) दो हजार वर्ष पूर्व जब यीशु मसीह इस पृथ्वी पर थे, तब जो भी उनके पास आये, उन्होने उन्हें चंगा किया। किसी को भी मना नहीं किया। उपवास करके प्रार्थना करने की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि दूल्हा उनके साथ था। बीमारों और संकट में पड़े हर मनुष्य की प्रार्थना उसी समय पूरी की जाती थी। एक हजार वर्षों के बाद दूल्हा फिर से लोगों के साथ होगा, इसीलिए प्रार्थनाएँ एकदम सुनी जायेंगी।

इन विशेषीधिकारों और आशीषों का आनन्द लेने के बाद भी प्रभु यीशु मसीह का घोर विरोध होगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि क्यों? हम शायदर सोचे कि इन दिनों, सिनेमाघर, नृत्यघर, शराब की दुकानें, जुए के अड्डे और पापं के निवासस्थान बिलकुल खत्म कर दिये जायेंगे। इन संस्थाओ को चलने के लिए यदि कोई हजार वर्षों की इस सरकार से लाइसेंस लेना चाहे तो यरुशलेम से उत्तर आयेगा "अनुमति नहीं"। ऐसी निराशाजनक स्थितियों को शैतान अवश्य प्रयोग करेगा ताकि यरुशलेम की पवित्र सरकार

के विरुद्ध विद्रोह भड़के। शैतान के भरमाने में आकर जो लोग विद्रोह में शम्मिलित होंगे उनकी संख्या समुद्र की बालू के समान होगी।

पाप-प्रेमी इन लोगों की भीड़ परमेश्वर से घृणा करेंगी और उनके इस पवित्र नगर के विरुद्ध ही जायेंगी जिसे दुल्हन भी कहा गया है। उसे ये लोग नाश करके अपने अधिपत्य में लेना चाहेंगे। किन्तु परमेश्वर का वचन बताता है "कि तब परमेश्वर ने स्वर्ग से आग नीचे भेजी और वे सब भस्म हो गये।" क्या परमेश्वर के विरुद्ध लड़कर कोई जीत सका है? क्या आपका ह्रदया स्वयं नहीं बतात कि यह असम्भव है? तब क्यों आप लोग आपस में लड़ते और प्रभु को अपना जीवन समर्पण करनें में क्यों देर करते हो? हम सप्रेम आपसे विनती करते हैं कि आप इसीं समय अपने को विनम्र बनाये और प्रभु यीशु के सामने अपने पापों को मान लें; तो वे आपको क्षमा करेंगे, अपने पवित्र लहू से धोकर साफ कर देंगे, और आपको एक नया ह्रदय देंगे ताकि आप उनके पवित्र मार्ग पर चलने योग्य हो जाएं। "मैं तुमको नया मन, दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करुंगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का ह्रदय निकालकर तुमकों मांस का ह्रदय दूंगा। (यहेजकेल ३६:२६)

## अध्याय २०
## श्वेत सिंहासन का न्याय

हमने देखा कि शैतान संसार की सेना का नेतृत्व कैसे करेगा और प्रिय नगर को नाश करना चाहेगा पर परमेश्वर की आग स्वर्ग से उतरकर आयेगी और उन्हें ही भस्म कर देगी। इसके पश्चात् परमेश्वरद्वारा दण्ड शैतान को दिया जायेगा। "और उनका भरमानेवाला आग और गन्धक की झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी

होगा; डाल दिया जायेगा और वे रात दिन युगानुयुग तक पीड़ा में तड़पते रहेंगे।" (प्रकाशित २०:१०)

यशायाह नवी ने दर्शन में देखा था कि शैतान जब नरक में पटका जायेगा तो वहाँ पड़े लोग उससे कैसे मिलेंगे "पाताल के नीचे अघोलोक में तुझसे मिलने के लिए हलचल हो रही है।

हे भोर के चमकीले तारे, तू क्यों कर आकाश से गिर पड़ा है? हे लूसिफर तू जो जाति-जाति को हरा देता था, अब तू कैसे कटकर भूमि पर गिराया गया है? .. क्या यह वही पुरुष है जो पृथ्वी को चैन से रहने न देता था; जो जगत को जंगल बनाता और उसके नगरों को ढा देता था और बन्धुओं को अपने घर जाने नहीं देता था? (यशायाह १४:९-१७)

जब तक परमेश्वर का दण्ड शैतान पर उतरा तब तक मेरे दुओं के पुनरुथान का काम हो चुका होगा। "परन्तु हर एक अपनी ही बारी से, पहिला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग। (१ कुरिन्थियों १५:२३) फिर वे जो भारी क्लेष के समय बचाये गये थे और अपनी जान देकर भी मसीह के प्रति ईमानदार रहे थे (प्रकाश २०:४) फिर वे जो हजार वर्षों के राज्य में रहते हुए उद्धार पाये थे।

इन धन्य लोगों पर किसी दण्ड की आज्ञा न होगी न उन्हें दोषी ठहराया जायेगा। "क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया और जिसका पाप ढांपा गया है और जिसकी आत्मा में कपट न हो। (भजन ३२:१-२) ये धन्य क्यों हैं? इसलिए कि उन्होंने स्वयं दण्ड भुगत लिया है (१ कुरिन्थि ११:३१(

प्रभु यीशु ने वह दण्ड अपने ही ऊपर ले लिया जो हमें मिलता था। "परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला

गया, हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हों जाँए।" (यशायाह ४३:५) यदि आप मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण कर लेंगे तो न तो आपको दोषी ठहराया जायेगा ना आप पर दण्ड की आज्ञा होगी/

शबसे अन्त में उनका पुनरुत्थान होगा जो उद्धार न पायें होंगे। यह कितना भयानक पुनरुत्थान होगा। यह जी उठाा दण्डित और दोषी ठहराये जाने का होगा। "और फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए और उनके लिए जगह न मिली। फिर मैंने छोटे-बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा और पुस्तक खोली गई अर्थात् जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ थाृ उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया और मृत्यु और अघोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया और उनमें से हरएक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। और वे मृत्यु और अघोलोक की आग की झील में डाले गये। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशित २०:१०-१५)

मरे हुओं को जिलाकर परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के सामने खड़ा करने की क्या आवश्यकता है? जीवन की पुस्तक क्यों खोली जाय और लोगों के सामने उनके कामों की सुनवाई (ट्रायल) क्यों हो? क्या कोई होगा जो प्रश्न कर सकता परमेश्वर से? यहाँ  हम परमेश्वर की महान सिद्धता को देखते हैं। वे अपने हर काम में सिद्ध और न्यायपूर्ण है। वेनहीं चाहते कि दुष्टों को अपने बचाव का मौका दिये बिना अन्तिम दण्ड दें।

यीशु मसीह अपने श्वेत महान सिंहासन पर विराजमान होंगे। 'श्वेत' रंग पवित्रता और शुद्धता को दर्शता है। हर पापी मनुष्य जिसने परमेश्वर के एकलोते पुत्र का लहू बहाये

जाने के द्वारा पापों की क्षमा माँगने से इनकार किया हैं; उसे मसीह के क्रूस के सामने खड़ा होना पड़ेगा "और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है।" (यूहन्ना ५:२२) किताबें खोली गई ऐसे प्रमाण जिनका कोई खण्डन नहीं कर सकता प्रस्तुत किए जायेंगे। कहीं पर, किसी तरह आपकें हर पाप को लिखा गया है, वे भी जो आपके हर पाप को लिखा गया है, वे भी जो आपने छिपकर किए हैं, अपने घर के बन्द दरवाजों के भीतर या अपने हृदय में। जो बुरे शब्द आपने कहे उनको लिखने के लिए परमेश्वर को टेपरिकॉर्डर की आवश्यकता नहीं है, न आपके बुरे कामों को प्रस्तुत करने के लिए उन्हें इनकी फिल्म बनाने की जरुरत है। आपका अपना विवेक और स्मरणशक्ति इतनी जागृत कर दी जायेगी कि आप वे सब बातें फिर से देख और सुन सकेंगे जो आपने की और कही हैं। "किताबें खोली गईं" पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में आप स्वयं अपने को दोषी पायेंगे। उस दिन हर मुँह बन्द कर दिया जायेगा और पूरा जगत परमेश्वर के सामने दोषी बना खड़ा रहेगा। (रोमियों ३:९) आप अपने घोर पापों के ज्ञान से भर जायेंगे। "और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशित २०:१५) जब आप पृथ्वी पर जीवित है तब जीवन की पुस्तक में लिखे जाने का मजाक उड़ाते हों पर उस दिन आपको पता चलेगा कि आपका नाम उसमें नहीं है तब कहोगे "हाय मैंने कितनी मूर्खता की कि मैने विश्वास नहीं किया कि आग की झील भी है, अब मैं यहाँ हूँ।"

आग की इस झील का वर्णन करने में हमें कोई आनन्द नहीं आ रहा है, पर हमें आपको सच तो बताना है। ताकि आप जानें कि प्रभु यीशु मसीह ने आपसे प्रेम किया और क्रूस पर अपनी जान दी ताकि आप इस भयानक जगह में जाने से बच जायें। नरक को पहले केवल शैतान और उसके दूतों के लिए तैय्यार किया गया था। (मत्ती २५:४१)

पढ़ें। पर परमेश्वर का वचन कहता है कि जिन दृष्टों नें परमेश्वर के प्रेम को ढुकराया और मसीह के बहुमूल्य लहू को पैरों से कुचला है, वे भी नरक में डाले जायेंगे। जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। नाश होते पापियों के विषय यह सोचना भी कितना भयानक है, वे आग की झील में कीड़ों के समान तड़फते रहेंगे।

प्रिय पाठकों प्रभु यीशु ने चेतावनी दी है कि "यदि तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाये तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो पाँव रहते हुए नरक में डाला जाय। और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलायो तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो आँख रहते हुए तू नरक में डाला जाए। (मरकुस ९:४५-४७) इस भयानक दण्ड से हमें बचाने के लिए प्रभु यीशु मे हमारे सारे पापों को अपने ऊपर ले लिया और क्रूस पर जान दे दी। जो यातनाएँ उन्होंने सहा उसका वर्णन किसी मनुष्य की जबान नहीं कर सकती। यह प्रेमी उद्धारकर्ता आज आपको बुला रहा है। क्या आप मसीह पर विश्वास करके अपने पापों को स्वीकार नहीं करेंगे कि आपको क्षमा मिले, प्रभु के बहुमूल्य लहू के द्वारा आप साफ हो सकें ?

प्रभु करे कि उस महिमामय पुनरुत्थान की धार्मिकता आप प्राप्त कर सकें।

## अध्याय २१
## नया यरुशलेम

न्याय के उस श्वेत सिंहासन का दर्शन पाने के बाद यीशु के चेले यहून्ना ने देखा (प्रकाशित २१:२) फिर मैंने पवित्र नगर नये यरुशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास उतरते देखा और वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।"

कलीसिया का जो सुन्दर वर्णन यहाँ किया गया है, उस पर ध्यान करें, यह मसीह की दुल्हन है। प्रभु यीशु मसीह ने चर्च या कलीसिया नाम उनको दिया है जो प्रभु में विश्वास के द्वारा उद्धार पा चुके हैं। ग्रीक भाषा में इसे 'इकलीशिया' कहा गया है – अर्थात् वे जो बुलाये गये हों। कलीसिया वे लोग हैं जो संसार के पापों में से बुला लिए गए है कि वे परमेश्वर के पवित्र लोग बनें।

संसार के आरम्भ से ही परमेश्वर लगातार प्रयत्न कर रहे हैं कि अपनी महान योजना नुसार एक वैभवशाली, महिमामय कलीसिया बनाए जो प्रभु यीशु मसीह की दुल्हन बने। परमेश्वर ने जैसे अदन की बारी में आदम और हवा को रचना की उसी प्रकार वे मसीह के लिए एक दुल्हन तैय्यार करना चाहते हैं और यह दुल्हन कलीसिया है। निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के ये कुछ वचन यह दर्शाते हैं कि मसीह के लिए कलीसिया कितनी प्रिय है –

"मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अघोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होगे।" (मत्ती १६:१८) और जो उद्धार पाते थे प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था। (प्रेरित २:४७) "हे पतियों अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उनके लिए दे दिया।" इफिसियों ५:२५ "और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे जिसमें न कलंक न झुर्री न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन वह पवित्र और निर्दोष हो।" इफिसियों ५:२७

"ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाय।" इफिसियों ३:१०

हल्लिलुयाह, हल्लिल्लुयाह, हल्लिल्लुयाह, हल्लिल्लुयाह आओ हम मगन और आनन्दित हों और उसकी स्तुति करें क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुँचा है, और उसकी पत्नी

ने अपने को तैय्यार कर लिया है। (प्रकाशित १९:७) हल्लिल्लुयाह पद १, ३, ४, ६ में भी है। जैसे एक पापी के पश्चाताप् करने पर परमेश्वर की उपस्थिति में स्वर्गदूत आनन्द कर रहे हैं वैसे ही मसीह की दुल्हन के रुप में कलीसिया तैय्यार कीया सजाई जायेगी तो स्वर्ग में कितनी-कितनी बार हल्लिल्लुयाह कहा जायेगा!

प्रकाशित वाक्य २१:१-२७ में नये शहर यरुशलेम का वर्णन है। इसमें कई रहस्य छिपे हैं। इन पदों में कुछ वर्णित बातों पर हम संक्षेप में ध्यान करें।

## परमेश्वर की महिमा (पद १०, ११)

"...... परमेश्वर की महिमा से भरपूर होना" .......

कलीसिया मसीह की दुल्हन है और वह प्रभु की महिमा की सहभागी होगी जैसे कि पृथ्वी पर एक स्त्री अपने पति के धन की सहभागी होती हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि विश्वासी ही कलीसिया या चर्च है। इनका अर्थ यह हुआ कि हम विश्वासी लोग परमेश्वर की महिमा के सहभागी होंगे। हम किसी भी प्रकार से इसके योग्य नहीं है, ना हमने कभी ऐसी आशा की थी। यदि पवित्रशास्त्र हमें न बताता तो यह सुन्दर बात हमें कैसे पता चलती। हम कितने आनन्द से पुकारते और सदा गाते रहेंगे। यह सब केवल परमेश्वर के अनुग्रह के कारण संभव है।

## दीवार (पद १२)

"और उसकी दीवार विशाल और उँची थी।" फिलिस्तीन के यरुशलेम नगर के चारों ओर दीवार थी, जिसमें कई प्रवेश द्वारा थे। यरुशलेम की यह दीवार जिसका वर्णन हम पवित्रशास्त्र में किया गया पढ़ते है तो इससे हम जानते है कि यह बहुत महत्वपुर्ण थी

और इससे हमें कोई खास सन्देश मिलता है। उदाहरण स्वरुप दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है – "यरुशलेम की शहरपनाह को तू बना।" (भजन ५१:१८) उसने इतने प्रेम और इच्छुकता से प्रार्थना क्यों की? फिर नेहमायाह जब इस्राएल से बहुत दूर, बाबुल में बन्दी था तो उसने सुना कि यरुशलेम की दीवारें तोडी जा रहीं है। (नहेमायाह ९:३-४) में हम पढ़ते हैं कि यह सुनकर वह इतना व्याकुल हुआ कि वह बैठकर रोने लगा। बाद में जब बाबुल के राजा अर्तक्षेत्र ने उसे गर्वनर नियुक्त किया तब उसने यरुशलेम की शहरपनाह को बनवाया।

इस दिवार या शहरपनाह का क्या उद्देश्य था? पहला ये दीवार यह दर्शाती थीं कि कौन-कौन से घर यरुशलेम – पवित्र – नगर के अन्दर हैं और कौन से बाहर तथा कौन लोग उसके निवासी हैं और कौन नहीं। दूसरा - यह शहरवासियों को शत्रुओं से बचाती थी। तीसरा-इसमें रहनेवाले लोगों को यह शान्तिपूर्ण वातावरण और धार्मिक कार्य करने की सुविधा प्रदान करती थी।

विश्वासियों की हर मंडली और सम्पूर्ण कलीसिया को इस नये यरुशलेम के समान होना चाहिए। इनको ऊँची दीवारों से घिरा रहना चाहिए। आपने शायद ऐसी कलीसियाओं का अनुभव किया होगा जिनमें सदस्यों को यह ज्ञात नहीं कि उनके चर्च के लोग या एल्डर्स या पास्टर नया जन्म पाये हैं या नहीं। क्योंकि साधारणत: आपस में मिलने पर लोग एक दूसरे से प्राय: पूछते हैं आपका नया जन्म कब हुआ? क्या आप उद्धार पा चुके हैं? यरुशलेम की कलीसिया इसका उदाहरण है। उसकी दीवारें टूटने पर शत्रुओं ने भी घुसकर उस पर नियंत्रण कर लिया था। ऐसे में जो थोड़े विश्वासी बच रहते हैं उन्हें आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करने की सुविधा नहीं रहती है। ऐसी कलीसिया स्वर्गीय यरुशलेम की विपरीत स्थिति की होती है।

प्रभु आपके मध्य यरुशलेम की दीवारें खड़ी करें और आपकी नये यरुशलेम की ओर अगुवाई करें।

## अध्याय २२
## नया यरुशलेम (क्रमश:)
## बारह फाटक (प्रकाशित २१:१३)

"पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्खिन की ओर तीन फाटक और पश्चिम की ओर तीन फाटक"। लोग नये यरुशलेम में प्रवेश करने को उत्तर, दक्खिन, पूरब या पश्चिम, किसी भी दिशा से आना चाहें तो उनके स्वागत के लिए हर दिशा में तीन-तीन फाटक होंगे। ये फाटक कलवरी पर यीशू के प्रेम को दर्शते हैं जो बड़े प्रेम से कहते हैं। "हे सब थके और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। (मत्ती ११:२८) हमारे पापो का बोझ उठा लेने के लिए और हमें शान्ति और आनन्द देने के लिए प्रभु यीशु मसीह क्रूस पर मरे। वे कहते हें "वह जो मेरे पास आता है, उसे मैं कभी न निकालूंगा।" (यूहन्ना ६:३६) प्रिय पाठको प्रभु यीशु आज आपको अपने पास बुला रहे हैं ताकि आपको पवित्र शहर में पवित्र शहर में प्रवेश करने का अधिकार हो प्रभु आपकी सहायता करे कि आप पापों को छोड़कर उनके ऊपर विश्वास करें ताकि आपको सौभाग्य प्राप्त हो सके कि आप पवित्र नगर के फाटकों में प्रवेश कर सकें। "क्योंकि उसमें कोई अपवित्र वस्तु, या घृणित काम करनेवाला, या झूठ गढ़नेवाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, पर केवल वे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखें हैं।" (प्रकाशित २१:२७)

हर कलीसिया चाहे वह इपुिसुस की या कुरिन्थियों की या लन्दन-न्यूयॉर्क या हैदराबाद की हो उसके सामने ये तीन, अदृश्य फाटक होना चाहिए जो हर एक को समान प्रेम, और भरपूर न्योता उन सबको देते हैं जो मसीह पर विश्वास करके उद्धार पाने को तैय्यार हैं। कलवरी के प्रति ऐसा प्रेम नये यरुशलेम की महिमा का भाग है। इस पवित्र नगर के फाटकों के भीतर लोगों ने एक बार कहा था "मैं पौलुस का हूँ।" "मैं अपिल्लुस का" वे सब कलीसियाई विभाजन को भूल जायेंगे और एक दूसरे को वैसे ही ग्रहण करेंगे जैसे प्रभु ने हम सबको ग्रहण किया है। वे फिर एक दूसरे को विभिन्न सिद्धान्तों के कारण भड़कायेंगे नहीं क्योंकि इससे मसीह की महिमा नहीं होती।

उस कलीसिया में जाने से अवर्णित आनन्द मिलता है जिसमें इस नये यरुशलेम की थोड़ी भी झलक हमें मिलती है। यहाँ सब विश्वासी केवल मसीही कहलाते हैं और किसी विशेष वर्ग की कलीसिया या सिद्धान्तों के प्रति समर्पित लोग नहीं हैं। वे किसी बन्धे नियमानुसार आराधना नहीं करते ना किसी आत्मिक अनुभव पर चलते हैं पर केवल मसीह के क्रूस की महिमा करते हैं।

## सुनहरा कीता (पद १५)

"नगर को नापने के लिए सन का फीता" था। फीता किसी का नाम लेनेवाला यंत्र है। देखें (यहेजकेल ४०:३) सुनहरापन देवत्व का चिन्ह है और नगर कलीसिया है। इसका अर्थ यह है कि कलीसिया को दैवत्व का स्तर अपनाना चाहिए। जब नये यरुशलेम को सुनहरे फीते से नापा जायेगा तो उसका हर नाम बिलकुल ठीक जँचेगा। आह! इस पवित्र नगर को देखकर कितना आनन्द होगा! देखें (भजन ४८:२) हर कलीसिया या

मंडली को अपने को इस सुनहरे फीते से नापना चाहिए ताकि उसे पता चले कि पवित्र नगर के स्तर पर उसने कितनी उन्नति की है।

परमेश्वर के नाप पवित्र बाइबल में पाये जाते हैं। जब कोई मंडली परमेश्वर के वचन का पालन करती और उनके सिद्धान्तों को पकड़े रहती है तब वह चर्च परमेश्वर की महिमा से भर जाता है। पढ़ें-निर्गमन ३९:४२, ४३ और ४०:३३-३४) इसके विपरीत यदि किसी कार्य का नाप परमेश्वर के स्तर के अनुसार नहीं है तो वे उसे मान्यता नहीं देंगे। यही सन्देश सुनहरे फीते से हमें मिलता है।

जब आप परमेश्वर के स्तर पर चलने की इच्छा करते हें, तब आपको उसका दाम चुकाना पड़ता है। अभी शायद आप कुछ बातें ऐसी करते हैं जो आपके पूर्वजों के समय से रीति-रिवाज के रुप में करते आये हैं। आप अपने पूर्वजों का बड़ा सम्मान करते हैं और उन्हीं विधियों पर चलना चाहते हैं। आप शायद कुछ मसीही या गैर-मसीही रीतियों का पालन करते हैं जो बाइबल के अनुसार न हों या शायद कुछ विधियों और अन्धविश्वासों पर चलते हैं" जो आपने अपने मित्रों, पड़ोसियों या उन लोगों से सीखा है जिनके मध्य आप रहते हैं। आपने इन बातों को अपना लिया है ताकि समाज की विचारधारा से मेल खायें। पर जब सुनहरे फीते ये सिद्धान्त नापे जायेंगे तो नये यरुशलेम के योग्य बिलकुल प्रमाणित नहीं होंगे। क्या आप इन रीतियों को त्यागकर परमेश्पर के नियमों पर लचने को तैय्यार होंगे ? यदि आप नये यरुशलेम में रहना चाहते हें तो यह दाम चुकता होगा।

नये यरुशलेम की ओर बढ़ना एक आवश्यक संयुक्त कार्य है यद्यपि इसमें आपको व्यक्तिगत कठिनाइयों और उत्तरदायित्व को उठाना होगा। इस्राएली बालक साथ-साथ कनान की ओर बढे। जब जैरुबाबेल के नेतृत्व में बाबुल में कैदी बनाये गये यहूदी, यरुशलेम को लौटे तो वे एक कम्पनी के रुप में संग आये। दूसरी कम्पनी ऐज्रा के साथ

और तीसरी नेहमाया के साथ आई। उद्धार पा लेने के बाद हमें भी एक कम्पनी में होकर साथ-साथ नये यरुशलेम की ओर बढ़ना चाहिए।

कई असैम्बलियां और कलीसियाँ हैं जो संसार के विभिन्न भागों में हैं पर परमेश्वर के वचन के अनुसार साथ-साथ चलने को तैय्यार हैं। परमेश्वर की स्तुति हो कि दिनों-दिन वे नये यरुशलेम की समानता में पास आती जा रहीं हैं। एक होती जा रहीं है। पवित्र आनन्द और आशा के साथ धार्मिक इस्त्रालियों ने गाया था – "हे यरुशलेम, तेरे फाटकों के भीतर हम खड़े हो गये हैं।" (भजन. १२२:२) हमारा आनन्द कैसा अपार होगा जब हम सब नये यरुशलेम के फाटकों के भीतर मिलकर खड़े होंगे!

## अध्याय २३
## नया यरुशलेम (क्रमशः)
## नीव (प्रकाशित २१:१९)

और उस नगर को नीव हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई थी। पहली नेव यश्ब की थी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की, चौथी मरकत की। पांचवी गोमेदक की, छठवी माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नवी पुखराज की, बारहवीं याकूतकी। ये सारे बहुमूल्य रत्न मसीह की बहुमूल्यता को भिन्न-भिन्न रुपों में दर्शातें हैं जो नेव हैं। "क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है; कोई दूसरी नेव नहीं डाली जा सकती।" (१ कुरिन्थ ३:११) यही वह नेव है जो सदाकाल तक अटल रहेगी। नगर, मंडलियाँ, कलीसियाँ जो इस नेव को छोड़ दूसरी नेव पर खड़ी की जाती हैं वे परीक्षा आने पर व सताव के समय गिर जायेंगी। इससे स्पष्ट हो जायेगा कि मजबूती से बने रहने की नेव डाली ही नहीं गई थी। केवल नया यरुशलेम ही अनन्त नेव है।

यही वह नगर है जिसकी आशा इब्राहीम अपने जीवन भर करता रहा। "क्योंकि वह उस स्थिर नेववाले और बनानेवाला परमेश्वर है।" (इब्रानियों ११:१०)

यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि जितने बहुमूल्य रत हैं वे सब पवित्र नगर को नींव की दीवार में लगे थे। नगर के छिपे और अदृश्य भाग भी अति मूल्यवान और उत्तम हैं। यह बात नये यरुशलेम की परिपूर्णता को दर्शाती है। यह मानव स्वाभव है कि वह अपने पापों को छिपाकर बाहरी रुप से अच्छा होने का दिखवा करे। पर मसीह का जीवन सर्वोत्तम और पूर्ण रुप से पवित्र है। चाहे वह उनका गुप्त या दृश्य जान भाग हो। मसीह का यह पवित्र स्वाभाव कलीसिया में दिखाई देगा, प्रगट होगा जो कि नया यरुशलेम है। मसी चाहते हैं कि कलीसिया में सम्पूर्ण परिपूर्णता हो। इसका अर्थ है कि चर्च के हर विश्वासी का गुप्त जीवन और प्रगट जीवन मसीह की सिद्धता और पवित्रता को दर्शाये।

यह बात ध्यान करने में अच्छी है कि इब्राहिम को यरुशलेम कभी नहीं मिला पर अपने जीवन भर वह उसे ढूंढता रहा। हम जब तक शारीरिक रुप में हैं; अपने जीवन में सिद्धता को कभी नहीं पा सकते पर जीवन भर हमें उसे पाने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। "इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनों, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" (मत्ती ५:४८) "आओ सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएँ।" (इब्रानियों ६:१)

## मोती के फाटक (पद २)

"और बारहों पाटक बारह मोतियों के थे, एक-एक फाटक एक एक मोती का बना था।" ... मोती ऑयस्टर सीप के अन्दर पाया जाता है। कभी-कभी रेत का कोई छोटा कण ऑयस्टर सीप और उसके मांस के बीच फंस जाता है। यह उसे बेचैन करता है और उसके शरीर से द्रव्य पिघलकर निकलने लगता है। यह विशेष द्रव्य रेतकण के ऊपर जमा होकर

उसे एक छोटी गेंद का आकार दे देता है। इस गेंद से और बेचैनी उत्पन्न होती है और, और अधिक द्रव्य ऑयस्टर के शरीर से निकलता है। इस प्रकार गेंन्द बढ़ती जाती है जब तक ऑयस्टर मर न जाये। और वह एक बड़ा और सुन्द मोती बन जाता हैं।

जैसे मोतीवाले ऑयस्टर को यह लगातार होनेवाला दर्द अन्त में उसकी मृत्यु का कारण बनता है और एक सुन्दर मोती बन जाता है; उसी प्रकार मसीह को कष्ट उठाने और मृत्यु सहने ने हमारे लिए एक नया और जीवित मार्ग खोला दिया है। इसके द्वारा हम पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में और नये यरुशलेम में प्रवेश कर सकते हैं। "सो हे भाइयों जबकि हमें यीशु के लोडू के द्वारा उस नये और जीवित मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है। जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिए अभिषेक किया है। तो आओ हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ और विवेक का दोष दूर करने के लिए ह्रदय पर छिड़काव लेकर और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएँ।" (इब्रानियों १०:१९, २०, २२)

मोती के फाटक दर्शाते हैं कि प्रभु यीशु ने हमसे कितना प्रेम किया। ताड़ना और मृत्यु सही ताकि हमारे लिए स्वर्ग जाने का मार्ग खोल दें। क्या आप अभी भी उसके अद्भुत प्रेम से इन्कार करते हैं? वे शुला रहे हैं। आज ही उनके पास आ जाइये।

## अध्याय २४
## आगामी युग

बाइबल में वर्णित पवित्र नगर और नये यरुशलेम के वर्णन द्वारा हमने बहुत सी सुन्दर बतों सीखी हैं। यहाँ आपने ध्यान दिया होगा कि परमेश्वर इस पवित्र नगर से कितना

प्रेम करते हैं। काश परमेश्वर की पवित्र आत्मा का कार्य हमारे जीवनों में हो ताकि हमें भी इस पवित्र नगर से प्रेम हो और हम वहाँ जाने को इच्छुक हों।

नये यरुशलेम की तुलना में जब हम स्वयं को जाँचते हैं, तो हम जान पाते हैं कि एक असैम्बली के रुप में हम परमेश्वर के नाप से कितने कम हैं; नये यरुशलेम की योग्यताओं से कितनी दूर है। फिर भी परमेश्वर की योजना कभी असफल नहीं होती। प्रभु यीशु ने कहा हैं – "मार्ग, सत्य और जीवन में ही हूँ।" (यूहन्ना १४:६) इसलिए की मसीह स्वयं मार्ग हैं, वे हमें पूर्ण शुद्धता की ओर ले जायेंगे। "इसलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वे उनका पूरा उद्धार कर सकते है, क्यों कि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।" (इब्रानियों ६:२५)

अपनी अनन्त योजना को पूरा करने के लिए प्रभु अपने संदेश वाहकों, दासों, और प्रचारकों को भेजते हैं, ताकि वे ईश्वर के वचनोंद्वारा लोगों को उद्धार दिला सके, ताकि वचन के पवित्र जल से धोकर कलीसियाओं को साफ और शुद्ध करें। और प्रभु अपने लिए एक तेजस्वी कलीसिया तैय्यार करे जिसमें न कोई दाग हो न झुर्री, पर वह निष्कलंक, निर्दोष और पवित्रहो। (इफिसियों ५:२६-२७) वर्तमान युग में यद्यपि हमें अनेक कष्टों और परीक्षाओं में से होकर जाना पड़ता है पर हमें चिन्ता, व्याकुलता और भय की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि वह तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है और अपनी महिमा की भरपूरी से सिंहासन के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है। (यहूदा २४) हमारे लिए अनन्त काल में अनेक आशीषें है – जैसे कि लिखा है (१ कुरिन्थ २:९) "परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखीं, और कान ने नहीं सुना; और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही है जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैय्यार की है।"

पवित्र बाइबल में इसी प्रकार की आशीयों का वर्णन इस प्रकार भी है (प्रकाशित २२:१-५) फिर उस ने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचोबीच बहती थी। और नदी के इस पार और उस पार जीवन का पेड़ था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे और वह हर महिने फलता थ; और उस पेड़ के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे। और फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। और उसक मुँह देखेंगे और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। और फिर रात न होगी और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा और वे युगानयुग राज्य करेंगे।"

ध्यान दें कि नदी, परमेश्वर के सिंहासन और मेम्ने से निकलकर पवित्र नगर में से बहेगी। यह दर्शाता है कि इस नगर के धन्य निवासी जीवन की आशीषों का सम्पूर्ण आनन्द ले सकेंगे। जीवन का वृक्ष हर महिने बारह प्रकार के फल देता है अर्थात् लोग पूर्ण संतोष का धन्य-आनन्द लेते हैं उन्हें सदा नये रुपों में आशीषें मिलती हैं और कभी उकताना नहीं पड़ेगा।

"उसके (प्रभु के) दास उनकी सेवा करेंगे और वे प्रभु का मुख देखेंगे।" ये आशीष कितनी महान होगी इसका वर्णन करना असम्भव है। क्या आप उसका दास बनना न चाहेंगे? क्या उनकी सेवा करना न चाहेंगे? क्या उनकी ज्योतिर्मय उपस्थिती में रहकर युगानुयुग उनके मुख की ओर ताकते रहना न चाहेंगे?

अन्नत: अब हमारी कहानी का अनत आ गया है। अर्थात् उस सुन्दर कहानी की समाप्ति जिसे हम वर्णन कर रहे थे। सच पूछो तो यह युगों की कहानी का अन्त नहीं है।

पवित्र बाइबल बताती है कि कई युग आयेंगे। एक युग बहुत लम्बा समय होता है जिसमें कई वर्ष होते हैं। ऐसे कई युग आनेवाले हैं। इन युगों में ईश्वर, परमपरमेश्वर हमारे प्रिय स्वर्गीय पिता अपनी महान दया हम पर प्रगट करेंगे उसे कई रुपों में अपनी छुड़ाई हुई सन्तान पर दर्शायेंगे। "कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।" (इफिसियों २:७)

एक सिद्ध कलीसिया के द्वारा अनन्तकाल तक परमेश्वर का नाम महिमा पायेगा। "कलीसिया में और यीशु मसीह में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।" (इफिसियों ३:२९)

## उपसंहार

परमेश्वर के वचन में वर्णित युगों की कहानी का वर्णन हमने समाप्त किया है। यह संसार में सुनी गई कहानियों में सबसे सुन्दर कहानी है। यह परमेश्वर के अमर प्रेम की कहानी है। यह हमारे जीवन में आशय लाती है और हमारे परखे जाने और क्लेषों को मूल्यवान बनाती है।

इस कहानी की समाप्ति पर परमेश्वर का वचन हममें से हरएक को कुछ अन्तिम सन्देश देता है – प्रथम सन्देश यह है – (प्रकाशित २२:६) "ये बातें विश्वास के योग्य और सत्य हैं।" हम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करें। जो कुछ इसमें लिखा है वह अवश्य पूरा होगा। प्रभु यीशु ने कहा – (मत्ती २४:३५) "आकाश और पृथ्वी टल जायें, पर मेरी बातें कभी न टलेंगी।"

दूसरा सन्देशहै – (प्रकाशित २२:७,२१) "देख मैं शीघ्र आनोला हूँ।" (पद २०) "मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।" यह समाचार तीन बार दोहराया गया है। प्रभु यीशु बहुत शीघ्र आनेवाले हैं। हमें तैय्यार रहना चाहिए ताकि हम आनन्द के साथ उनसे मिल सकें।

“जो अन्याय करता है वह अन्याय ही करता रहे, और जो मलिन है वह मलिन बना रहे, और जो धर्मी है वह धर्मी बना रहे और जो पवित्र है वह पवित्र बना रहे।” (पद ११) हमारी गिनती उन लोगों में बनी रहे जो पवित्र और धार्मिकता में लगातारा स्थिर रहते हैं।

अब यह अन्तिम निमंत्रण है उन लोगों के लिए जिन्होंने मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण नहीं किया है। प्रिय पाठकों यदि अब तक आप बचाये नहीं गये हैं तो बड़ी सच्चाई और तीन बार अनुनय विनय से कहा जा रहा है – आइये – आइये – आइये (पद १७( क्या आज ही आप अपने उद्धारकर्ता के पास न आयेंगे? क्या पवित्र नगर के फाटकों से अन्दर आने में आप शीघ्रता नहीं करेंगे? (पद १५) “पर कुत्ते और टोन्हे और व्यभिचारी और हत्यारे और मूर्मिपूजक और हरएक झूठ का चाहेनवाला और गढ़नेवाला बाहर रहेगा।”

उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह जिन्होने आपसे प्रेम किया और आपके पापों के बदले क्रूस पर मरे, वे आपको अनन्त जीवन का इनाम मुफ्त देना चाहते हैं (पद १७) “और आत्मा और दुल्हिन दोनों कहती हैं आ; और सुननेवाला भी कहे कि आ; और जो प्यासा हो वह आए।” प्यारे पाठको यदि परमेश्वर की बातों के लिए आपमें थोड़ी सी भी प्यास है तो कृपया आज ही आ जाइये।

हर एक जो खुशी से आने को तैय्यार है – “और जो कोई चाहे, वह जीवन का अल सेंतमेंत ले” (पद १७) आप चाहे सबसे बड़े पापी रहे हों, सबसें बड़े शक्की रहे हों, फिर भी आप आ सकते हैं। हर एक जो प्रभु यीशु के बुलावे को सुनता और उसपर विश्वास करता है उसे वे कभी नाह नहीं करेंगे। (यहून्ना ६:३६) “जो मेरे पास आयेगा उसे मैं कभी नहीं निकालुंगा।”

अब पद १८ और १९ में चेतावनियाँ है कि परमेश्वर के वचन की; “यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के

पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा। इस तरह उसे कड़ा दण्ड मिलेगा जो अनन्तकाल के लिए होगा। यीशु के चेले यहून्ना ने बताया कि प्रकाशितवाक्य पुस्तक पवित्रशास्त्र बाइबल की अन्तिम पुस्तक है। १५०० वर्षों पर पवित्र बाइबल की विभिन्न पुस्तकें विभिन्न लोगों द्वारा लिखी गईं; पर पुराने नियम या नये नियम के लेखकों में से चाहे वे मत्ती, मरकुस, पौलुस या पतरस हों; किसी ने यह नहीं कहा कि उनके द्वारा लिखी पुस्तक अन्तिम पुस्तक है। पौलुस द्वारा लिखी गई तिमुथियुस पुस्तक की रचना ६६ ए.डी. में हुई थी। इसी समय पतरस की पुस्तक यूहन्ना द्वारा कई वर्ष बाद ९६ ए.डी. में लिखी गयी थी। परमेश्वर ने यूहन्ना को दिखाया कि पवित्रशास्त्र की अन्तिम पुस्तक का लेखक वही है, इसीलिए सब लेखकों में से उसी ने इन चेतावनियों को लिखा है।

चेले यूहन्ना ने प्रकाशित वाक्य को जब लिखा था उसके बाद अब लगभाग दो हजार वर्ष बीत चुके हैं। उनकी बड़ी चेतावनियों के बाद भी कुछ लोगों ने कोशिश की कि पवित्रशास्त्र में कुछ और अंश जोड दें। और कुछ ने कई भागों को इसमें से निकालने का प्रयत्न किया है कई लोगों ने बाइबल को नाश करने की कोशिश की, पर परमेश्वर की अद्भुत शक्ति से सम्पूर्ण बाइबल सुरक्षित है तथा बहुत सी भाषाओं में इसका अनुवाद किया जा चुका है। इसलिए हम सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर के वचन पर विश्वास करें और उसका पालन करें।

प्रभु यीशु कहते हैं – "अवश्य, मैं शीघ्र आता हूँ। हम भी चेले यूहन्ना के साथ मिलकर कहें – "हे प्रभु यीशु आ" (प्रकाशित वाक्य २२:२०)

अब हम पवित्रशास्त्र के वचनों के द्वारा समाप्त करते हैं – "प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे।" (प्रकाशित वाक्य २२:२१)

## लेखक का वर्णन

लेखक Br. श्री.सी.ई. दासन का जन्म तामिलनाडु के एक गाँव में हुआ था। बहुत छोटी आयु में ही वे अनाथ हो गये थे अत: एक छात्रावास में उनका पालन-पोषण हुआ जहाँ धार्मिक सिद्धान्तों का बीज उनके मन में बोया गया था।

स्नातक शिक्षण समाप्त करने के पश्चात् वे अध्यापक बन गये। ईश्वर की इच्छानुसार २५ वर्ष की अवस्था में अनायास वे ब्रदर भगत सिंह से मिले और उनके द्वारा प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रुप में ग्रहण किया।

१९४५ में परमेश्वर की बुलाहट को सुनकर उन्होंने अपने समाजिक पद से त्याग पत्र दिया और ब्रदर भगत सिंह के साथ पूर्णरुप से मसीही सेवा में लग गये। एक प्रचारक का काम करने के साथ-साथ ब्रदर दासन जर्नल्स और मैगजीन्स के लिए मसीही साहित्य लेखन में बड़ी आतुरता के लिए मसीही साहित्य लेखन में बड़ी आतुरता से संलग्न रहे। अक्तूबर २३, १९८५ में वे प्रभु के पास चले गये।

### युगों की कहानी

संसार के इतिहास में जो सबसे महत्वपूर्ण कहानी बताई गई वह मानव ही की है। किन्तु कई लोग इससे वंचित रह गये। सत्य को इसके स्त्रेत में ढूँढने के बदले व्यर्थ में यहाँ-वहाँ भटककर ढूंढने लगे। लेखन न इस कहानी को पुस्तों की महापुस्तक बाइबल में पाया और उसे ही वे बड़े सरल ढंग से बयान कर रहे हैं। सारांश में हम कह सकते हैं कि इस कहानी में वर्णन है कि मनुष्य ने स्वर्ग को कैसे खो दिया और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा वह उसे कैसे पुन: प्राप्त कर सकता है। यह एक रामांचक कहानी है जिसे सभी को जानना चाहिए। वे सृष्टि के निर्माण से वर्णन करना आरम्भ करते हैं और अन्त में बताते हैं कि कैसे मनुष्य को स्वर्ग में नया शरीर मिलेगा।